RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 13	अंक : 1	मुम्बई, अप्रैल 2023	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 13	ISSUE : 1	MUMBAI, APRIL 2023	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2549

हस्तीनपुर में निर्मित भगवान श्री 1008 आदिनाथ को छह माह पश्चात प्रथम आहार कराते हुए राजा श्रेयांश

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 13 अंक 1 अप्रैल 2023

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोचलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

श्री महेश काला
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ रामअजोर दुबे
सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
श्री प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

एक युगपुरुष का अवसान	6
हृदय में सदा जीवंत रहेंगे पूज्य भट्टारक स्वामी जी	8
क्या लिखें क्या छोड़ें -	11
सुख शांति प्रदायक भगवान महावीर स्वामी के पावन संदेश	13
भगवान महावीर की अहिंसा सार्वभौमिक, सर्वकालिक है	15
महावीर के जन्मोत्सव पर ढोल बाजाओ गली-गली	21
युग पुरुष : भगवान महावीर	23
नैनागिरि जैन तीर्थ : पुरातन से अद्यतन – एक सार्थक दस्तावेज	25
नवनियुक्त भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी स्वामी श्रवणबेलगोला	30

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, बी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 / 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (25 वर्ष) : 2500 रुपये

सादर जय जिनेन्द्र,

बंधुओं,

अत्यंत दुःखद है कि विगत दिनों हमने अपने समाज के वरिष्ठ एवं प्रतिष्ठित विद्वान दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेलगोला के भट्टारक **"जगतगुरु कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री चारूकीर्ति महास्वामी"** जी की समाधि से एक अनमोल रत्न खोया है। स्वामी जी की क्षति संपूर्ण जैन समाज के लिए एक अपूर्णनीय क्षति है। भगवान बाहुवली क्षेत्र श्रवणबेलगोला एवं कर्नाटक समाज के लिए स्वामी जी ने अब तक जो ऐतिहासिक कार्य किये हैं उन्हें सदा इतिहास में याद रखा जायेगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रति उनका असीम स्नेह और कृपा आशीर्वाद हमें हमेशा प्राप्त होता रहा है। स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन जैन धर्म और उसकी प्रभावना के लिए समर्पित कर दिया था। स्वामी जी के मार्गदर्शन में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के १२ वर्ष में एक बार होने वाला महामस्ताभिषेक जैसे चार महाकुम्भों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिसमें देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल सहित अनेकों प्रतिष्ठित विद्वानों, साहित्यकारों तथा देश-विदेश की सम्पूर्ण जैन समाज को उपस्थित कराकर अपने कुशल नेतृत्व के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न कराये हैं, भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक का आयोजन परम्परागत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षता में होता है जिसमें आपका सम्पूर्ण मार्गदर्शन कमेटी को प्राप्त हुआ है। आपके द्वारा नित नए कीर्तिमान स्थापित हुए हैं। आपके मार्गदर्शन में १९८१ में संपन्न हुए ऐतिहासिक महा-मस्तकाभिषेक में देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने आपको "कर्मयोगी" की उपाधि से सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया था, इतना ही नहीं उन्होंने जैन धर्म से प्रभावित होकर दिल्ली सदन में भगवान महावीर की शिक्षाओं की प्रभावना की और सारे देश को जैन बताया।

महास्वामी जी के मार्गदर्शन में ४० से अधिक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार, धर्मशालाओं व आवास गृहों का निर्माण, चिकित्सालय का निर्माण, शिक्षा सम्बन्धी अनेकों संस्थाएँ जिनमें विद्यालय, महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग कॉलेज, बाहुवली स्कूल ऑफ़ नर्सिंग, लौकिक शिक्षा के साथ जैन धर्म, गोमटेश्वर विद्यापीठ ब्रह्मचर्य आश्रम आदि का निर्माण व सफल संचालन हो रहा है तथा प्राकृत भाषा आदि का ज्ञान कराने के लिए श्रुतकेवली एज्युकेशन ट्रस्ट स्थापना का श्रेय भी स्वामी जी को प्राप्त है।

स्वामीजी ने ६००० से अधिक पांडुलिपियाँ संरक्षित करवाई, ये पांडुलिपियां कन्नड़, प्राकृत, हिंदी, तमिल, मलयालम, मराठी एवं संस्कृत में हैं। इन सब के अतिरिक्त कम्म पथ्थडि पाहुडा, कथा पाहुडा इन दो प्राकृत ग्रंथों के हिंदी अनुवाद कराये।

स्वामी जी ने सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनियां में भगवान बाहुवली और जैन शासन का परचम फहराया है दुनिया के अनेकों देशों में जैन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा और धर्म शिक्षा प्रदान कराने का श्रेय प्राप्त किया है। श्रमण परम्परा के आचार्यों, मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं एवं समाज के विद्वानों के साथ आपका अनुपम नाता रहा है। आपने पंथबाद से हटकर समाज को जागरूक और धर्मशिक्षा का सन्देश देने का कार्य किया है। अपने सदव्यहार, चर्या, ज्ञान के साथ आदर्श जीवन के कारण स्वामी जी वर्तमान युग में चक्रवर्ती जैसी विभूति पाने वाले एक ऐतिहासिक पुरुषों में प्रिसिद्ध हो गये हैं।

स्वामी जी एक पुण्यशाली व्यक्तिव थे, और उन्होंने अपने जीवन में अपने तप, त्याग, संयम एवं सामजकल्याण की भावना से विशेष पुण्य का संचय किया है। स्वामी जी ने अपने अंतिम समय का आभास कर समाधि की ओर कदम लिया, स्वामी जी की दूरदृष्टि सोच के सकारात्मक प्रभाव से समाधि के पूर्व स्वामी जी ने मठ के संचालन के लिए अपने शिष्य भट्टारक आगमकीर्ति जी को पट्टाधीश की शिक्षाएं एवं मार्गदर्शन प्राप्त करा दी थीं जिससे मठ की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे और जैन धर्म और भगवान बाहुबली का परचम सदा देश-दुनिया में लहराता रहे।

मैंने व्यक्तिगत रूप से स्वामी जी से अनेकों बार भेंट कर उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया है। उनका सहज, सरल और चर्यामय जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक व सबको प्रभावित करने वाला रहा है । अपने से छोटे-बड़े, धनी-निर्धन सभी के प्रति उनका अगाध स्नेह व अनुपम वात्सल्य के साथ यथा योग्य सम्मान करना ये स्वामी जी की विशेषता रही है।

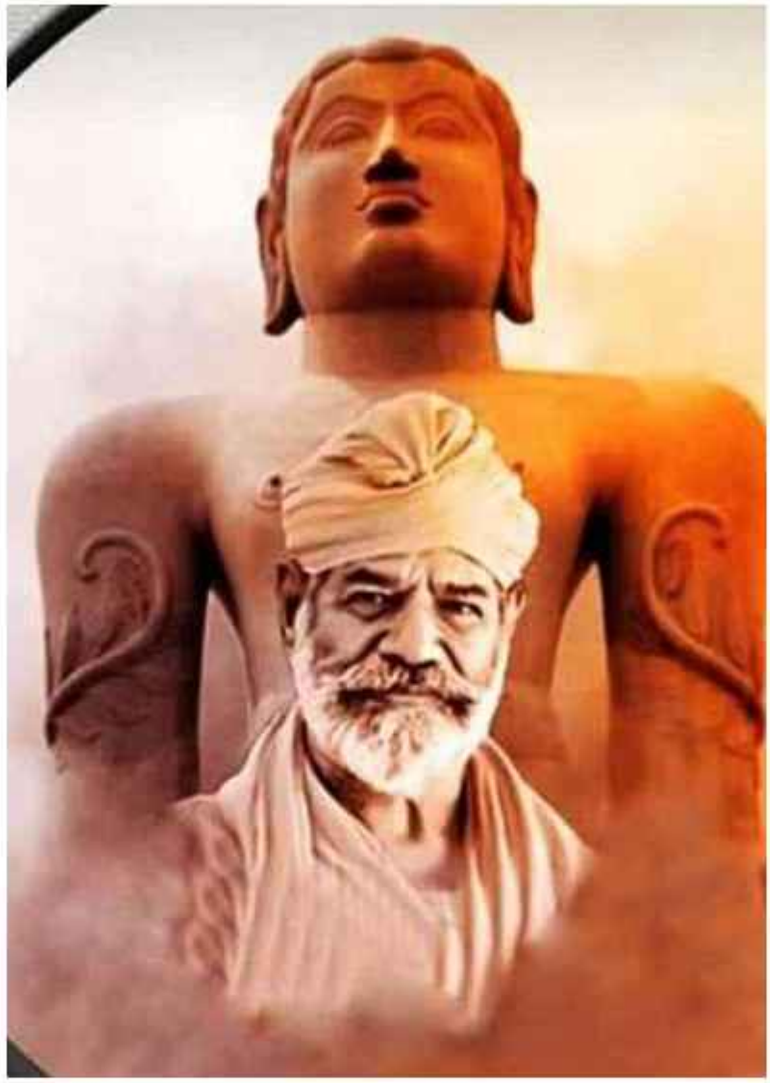

जगतगुरु कर्मयोगी १०५ चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी स्वामी जी की समाधि के अवसर पर राजकीय सम्मान के साथ उनके अंतिम संस्कार में श्रवणबेलगोला पहुंचकर मुझे महास्वामी जी के चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। स्वामी जी की समाधि के पश्चात २७ मार्च २०२३ को दिगम्बर जैन मठ के नए भट्टारक स्वामी श्री आगमकीर्ति जी के संपन्न पट्टाभिषेक अवसर पर शुभकामनायें प्रेषित करते हुए भगवान बाहुबली से कामना करता हूँ कि आपका मार्गदर्शन व आशीर्वाद हमें सतत प्राप्त होता रहे।

इस माह अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ देश और दुनिया में सम्पूर्ण जैन समाज ने भगवान महावीर का २६२२ वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया है। इस बार अलग अलग रूप से अलग-अलग प्रान्तों में दो दिन भगवान महावीर को समर्पित रहे हैं। चूँकि चेत्र शुक्ल त्रयोदशी को जन्में भगवान महावीर की जन्म तिथि दो दिन पड़ जाने से अनेकों प्रान्तों में ३ अप्रैल व अनेकों जगह ४ अप्रैल को भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम भव्य रूप से सानंद संपन हुए हैं। भगवान महावीर व जैन धर्म की प्रभावना में सम्पूर्ण जैन समाज ने अपने-अपने स्तर से सहयोग प्रदान कर असीम पुण्य का संचय किया है जिसकी मैं अनुमोदना करता हूँ।

जैसा कि सभी को विदित ही है कि विश्व प्रसिद्ध तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी एवं अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र शिरपुर दोनों केसों के विवाद सुप्रीम कोर्ट में अंतिम निर्णय के लिए लंबित हैं। श्री सम्मेदशिखर जी का केस सुनवाई के लिए इसी महीनें के अंतिम सप्ताह तक बेंच पर आने वाला है । तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से दोनों केसों में भरपूर प्रयास किये जा रहे हैं जिसमें वकीलों के बिल भुगतान इत्यादि रूप में करोड़ों रुपये व्यय हो रहे है।

तीर्थों को संरक्षित करने के लिए वर्तमान में हमारी परीक्षा की घड़ी का समय है अतः मेरा सकल दिगम्बर जैन समाज से आग्रह है कि आप सभी तीर्थों के प्रति अपनी श्रृद्धा-आस्था प्रकट करते हुए दिगम्बर स्वरूप की धरोहरों को यथावत रखने में तीर्थक्षेत्र कमेटी को धन-बल से सहयोग कर तीर्थों के संरक्षण में अपनी अहम भूमिका अदा करें।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

साधर्मी, बंधु-भगनियों

सादर जय जिनेन्द्र,

सम्पूर्ण जैन समाज के लिए २३ मार्च २०२३ का दिन स्तब्ध कर देने वाला दिन रहा है, प्रातः काल जब समाचार प्राप्त हुआ कि दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेलगोला के पूज्यनीय भट्टारक जगतगुरु "कर्मयोगी" स्वस्ति श्री चारुकीर्ति महास्वामी जी की समाधि हो गयी है तब इस समाचार ने सारे देश की जैन समाज में शोक व्याप्त कर दिया। जैन जगत की भट्टारक परम्परा में महास्वामी जी की प्रतिष्ठा चरम पर रही है। समता के साथ ममता और नम्रता के साथ दृढ़ता का अद्भुत समन्वय स्वामीजी के विराट व्यक्तित्व में समाहित था। स्वामी जी ने जीवनपर्यंत जैन धर्म की प्रभावना और भगवान बाहुबली की भक्ति के साथ अपनी चर्या को साधुमय बनाकर समाज और धर्म के लिए ऐतिहासिक कार्यों की न सिर्फ सार्थक योजनायें बनाई बल्कि उनको पूर्ण कर हम सभी के लिए उदाहरण में रूप में प्रस्तुत कर दिखाया है। महास्वामी जी द्वारा किये गये कार्य सदा हमारे लिए प्रेरणादायी रहेंगें जिन्हें युगों-युगों तक सदा स्मरण किया जायेगा।

"कर्मयोगी" की उपाधि से अलंकृत परमपूज्य १०५ चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी की समाधि के अवसर पर राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ जिसमें मुझे कमेटी के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित होकर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर प्राप्त हुआ। दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेलगोला के नए भट्टारक आगमकीर्ति स्वामी जी का २७ मार्च २०२३ को धार्मिक अनुष्ठान के साथ संपन्न उनके पट्टाभिषेक के अवसर पर उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

वर्तमान में जैन धरोहरों के मूलस्वरूप को बचाने के लिए एक कठिन समय का सामना करना पड़ रहा है। प्रत्येक सिक्के के दो पहलु होते हैं, अगर एक प्रकार से देखा जाए तो यह बहुत ही दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे अनेकों तीर्थों पर उपसर्ग हो रहे हैं जिनकी रक्षा के लिए हमें अदालतों में लड़ने जाना पड़ रहा है किन्तु सकारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो हमारा यह परम सौभाग्य है कि जैन धर्म एवं उसके मूलस्वरूप के बचानें एवं तीर्थक्षेत्रों पर उत्पन्न उपसर्गों को हटाने का उत्तरदायित्व हमें प्राप्त हुआ है।

विदित है कि शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी का केस अपनी अंतिम सुनवाई के लिए लंबित है। गत माह तारीख ०१ मार्च २०२३ को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के लिए श्री सम्मेदशिखर जी का केस बेंच पर आया था जिसमें कोर्ट ने अप्रैल माह की अनिश्चित तारीख दी है सम्भावना है शीघ्र ही यह केस भी सुनवाई के लिए बेंच पर आने वाला है जिसकी हमारी ओर से तैयारी हैं।

इसी प्रकार अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर क्षेत्र का केस भी अपने अंतिम निर्णय के लिए लंबित हैं। गत माह दिनांक २२/०२/२०२३ को कोर्ट द्वारा आये अंतरिम आदेश (Interim Order) के पश्चात शिरपुर क्षेत्र पर मंदिर जी का ताला खोलकर लेप आदि की प्रक्रिया प्रारंम्भ हुई जिसके चलते क्षेत्र पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ हुई। वस्तुतः २२ फरवरी के आदेश के बाद लेप आदि कार्यों में प्रतिमा जी के मूलस्वरूप के बदलाव करने की सम्भावनाएँ बन रही थी जिस के मद्देनजर हमारे सीनियर वकीलों की सलाह पर हमारी ओर से इस अंतरिम आदेश पर विस्तृत विश्लेषण कर एक और एप्लीकेशन याचिका दायर की गयी जिसकी सुनवाई दो तारीखों (१४-३-२०२३ व ०५-०४-२०२३) पर हुई। इस विशेष याचिका की हुई सुनवाई ०५/०४/२०२३ को कोर्ट ने यह आदेश दिया कि १९४७ के समय के अनुसार ही प्रतिमा जी का मूलस्वरूप रहेगा एवं प्रतिमा जी के लेप में किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया जायेगा तथा आगे के लेप का कार्य जिला प्रशासन की उपस्थिति में संपन कराया जाए, इस प्रकार यह एप्लीकेशन सार्थक सिद्ध हुई। चूँकि सुप्रीम कोर्ट में जो हमारा मूल केस अभी तक अपने अंतिम निर्णय के लिए लंबित है उसमें इन आदेशों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आप को ज्ञातव्य है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा ही उक्त केसों की पैरवी की जा रही है जिसमें करोड़ों रुपयों की राशियाँ व्यय हो रही हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी दिगम्बर जैन समाज की एक प्रतिनिधि संस्था है जो समाज के दान-दातारों पर आश्रित है मैं उन सभी दानी महानुभावों के प्रति तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ जिन्होंने हमें तीर्थों के संरक्षण के लिए अपने धन से शक्ति प्रदान की है तथा मेरा समाज के सभी समृद्ध दानी महानुभावों से आग्रह है कि हमें अपने तीर्थों के सरक्षण के लिए पर्याप्त धन राशि की आवश्यकता हो रही है अतः समाज के सभी धनी महानुभाव तीर्थक्षेत्र कमेटी को धन बल से सशक्त कर हमें शक्ति प्रदान करने की कृपा करें जिससे हम हमारे तीर्थों व उनके मूलस्वरूप को संरक्षित कर जैन धर्म और उसके अस्तित्व का संरक्षण कर सकें।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

एक युगपुरुष का अवसान

1949-2023
स्वस्तिश्री, कर्मयोगी, भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी

1973 में भगवान महावीर 2500 निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के सन्दर्भ किये गये आयोजनों से विश्व में सुधीजनों को जैनधर्म के बारे में ज्ञान हुआ किन्तु प्रचार में दक्ष श्वेताम्बर बन्धुओं के सुनियोजित योजनाबद्ध प्रचार से वे उसे ही जैनधर्म का मूलस्वरूप मनाने लगे तथा उन्हें जैनधर्म की मूल परम्परा-दिगम्बर एवं दिगम्बरत्व का कोई विशेष ज्ञान न हो सका। हमारी उदासीनता एवं दिगम्बर जैन संतों की कठोर चर्या के कारण जब विश्व में दिगम्बरत्व का अधिक प्रचार नहीं हो पाया था तब पूज्य स्वामी जी ने श्रवणबेलगोल के गोम्मटेश्वर की मूर्ति के प्रतिष्ठापना सहस्राब्दि महामहोत्सव का 149 दिगम्बर जैन संतों के पावन सान्निध्य में भव्य आयोजन कर दिगम्बरत्व का परचम दिग्दिगन्त में फहराया। उस आयोजन में सैकड़ों दिगम्बर जैन संत मौजूद थे जिनमें से राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानन्द जी एवं वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की ससंघ उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय है। 1993 में लगभग 250 तथा 2006 में लगभग 300 दिगम्बर संत मौजूद रहे। 2018 के महोत्सव में तो लगभग 400 संतों का पावन सान्निध्य रहा जो एक रिकार्ड है।

मैंने स्वयं 1981, 1998, 2005, 2006, 2017, 2018 में अनेकों बार श्रवणबेलगोल के भगवान गोम्मटेश्वर के दर्शन किये हैं। हर बार वहाँ जाकर स्वयं को धन्य अनुभव किया किन्तु 1981 का एक प्रसंग भुलाया नहीं जा सकता।

बात जुलाई 1981 की है। मैं जैन गणित पर अपने शोध कार्य के सन्दर्भ में श्रवणबेलगोल गया था। डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल जी के सहयोग से मुझे जयपुर के दि. जैन ठोलियाँन मंदिर से गणित विषय की 2 पांडुलिपियाँ प्राप्त हुई। उनमें से एक महावीराचार्य के गणितसार संग्रह के आधार पर आ. माधवचन्द्र त्रैविद्य द्वारा लिखी गई थी। कृति में 13 नये सूत्र थे, प्रशस्ति भी थी किन्तु कन्नड़ मिश्रित संस्कृत होने के कारण उत्तर भारत के विद्वान अर्थ नहीं कर पा रहे थे। श्रवणबेलगोल में मैंने वहाँ उस समय विराजित आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज एवं वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के दर्शन कर आने का कारण बताया तो उन्होंने कृपापूर्वक भट्टारक स्वामी जी से परिचय कराया। वह प्रथम परिचय था। वात्सल्य की प्रतिमूर्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी ने पं. बाहुबली पार्श्वनाथ उपाध्ये के सहयोग से षट्त्रिंषिका की प्रशस्ति का सही अर्थ कराया फलतः आचार्य माधवचन्द्र त्रैविद्य की एक नई कृति प्रकाश में आ सकी वरना यह कृति पूरे देश में गणितसार संग्रह की अपूर्ण कृति के रूप में ही सूचीबद्ध है एवं आ. माधवचन्द्र त्रैविद्य का श्रम बेकार जा रहा था।

1993 के महामस्तकाभिषेक में मेरा समाज के उदीयमान युवा के रूप में विशेष प्रशस्ति सहित सम्मान (14.12.93) हुआ।

1998 में मैसूर वि.वि. मैसूर की एक इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस के बाद जब मैं श्रवणबेलगोल (31.12.98) गया तो स्वामी जी ने मठ की परम्परा के अनुरूप चन्दन की मूर्ति एवं चन्दनमाला के साथ मेरा भव्य सम्मान किया। मैंने कहा स्वामीजी हम श्रावक है हमें मंदिर में देना चाहिए न कि लेना, तो स्वामी जी ने कहा 'तुम अपना काम करो उसके लिए हमने नहीं रोका किन्तु मठ में विद्वान के आने पर मठ की परम्परा के अनुरूप हमें विद्वान का सम्मान तो करना ही होगा। यह जिनवाणी का सम्मान है, यही मठ की परम्परा है।' मैं इससे इतना अभिभूत हुआ कि उसी दिन तय किया भले ही कोई कितनी भी उपेक्षा करे मैं तो अब जैन गणित पर ही शोध जारी रखूँगा।

2006 (28.12.05-01.01.06) एवं 2018 (1-5 अक्टूबर 2017) के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर भी विद्वत् सम्मेलनों में सहभागिता का अवसर मिला। सरस्वती पुत्रों का जैसा सम्मान श्रवणबेलगोल में होता है वैसा अन्यत्र मैंने कहीं नहीं देखा। मैंने 2017 के अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत सम्मेलन में भी सहभागिता दी जिसके लेखों को चारु श्री में प्रकाशित किया गया है। विद्वत् सम्मेलन में पठित महत्त्वपूर्ण शोधालेखों का अद्यतन अप्रकाशित रहना निश्चय ही संयोजकों की उदासीनता ही दिखाता है वरना वह कब का प्रकाशित हो जाता। पूज्य श्री तो विद्वानों के लिए सदैव उदार रहते थे।

पूज्य स्वामी जी ने 10-15 वर्ष पूर्व धवलादि ग्रंथों के कन्नड़ संस्करण तैयार करने में गणितीय अंशों की विशद व्याख्या हेतु कुछ माहों के लिए मुझे श्रवणबेलगोल रहने को आमंत्रित किया था किन्तु मैं शासकीय सेवाओं की व्यस्तता के कारण न जा सका। खैर! अब ये संस्करण प्रकाशित भी हो चुके हैं। मैंने श्रवणबेलगोल में दिये गये अपने गणित विषयक 3

BHAGWAN BAHUBALI SWAMY
MAHAMASTAKABHISHEKA MAHOTHSAVA - 1993
YOVA SAMMELANA COMMITTEE

Dr. Anupam Jain

With the Blessings of His Holiness
Swastisri Charukeerthi Bhattaraka Swamiji of Shravanabelagola
We Felicitate you for your achievement and level of excellence you have reached in the field of

MATHEMATICS

This honour is being conferred on you on Tuesday the fourteenth day of December 1993 during Maha Mastakabhisheka Celebrations at Srikshetra Shravanabelgola.

व्याख्यानों का संकलन श्रवणबेलगोल में संख्यान (2018) शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित कराया है। इस पुस्तक में जैन गणित एवं भारतीय गणित के अध्ययन में इस मठ के योगदान को भी विशेष रूप से चिन्हित किया गया है।

पूज्य स्वामी जी ने 1986-87 में तिलोयपण्णत्ती की एक प्राचीन कानड़ी प्रति का देवनागरी में लिप्यांतरण कराया था। जिससे आ. विशुद्धमती माताजी तिलोयपण्णत्ती का 3 भागों में नया संस्करण परिष्कृत रूप में प्रकाशित करा सकी। शून्य के जैन ग्रन्थों में प्रयोग का इस ग्रंथ में अत्यन्त प्राचीन प्रमाण मिलता है। काल की सर्वोच्च संख्या अचलात्म का सही मान [$84^{31} \times 10^{90} = 4.49 \times \square 10^{140}$] इस संस्करण में ही मिला। शताधिक नई गाथाएँ भी जुड़ी।

एक प्रसंग मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकता। अगस्त 2018 में पर्यूषण पर्व मैं अपने बहनोई श्री नीलेश जी जैन एवं अन्य के साथ श्रवणबेलगोल गया था। महामस्तकाभिषेक तो सम्पन्न हो चुका था किन्तु अभिषेक का क्रम चल रहा था। पूज्य स्वामी जी के दर्शन हेतु जाने पर उन्होंने पूछा कि अभिषेक करने जाओगे? मैंने कहाँ क्यों नहीं, यह तो हमारा सौभाग्य होगा। उन्होंने कहा कि जाओ मैं भी आता हूँ। हम दोनों विन्ध्यगिरि पर्वत पर अभिषेक हेतु लम्बी लाइन से पहुँचे। पूज्य महास्वामी जी हमसे पहले पहुँच चुके थे। उन्होंने जैसे ही हमें देखा आगे बुला दिया। 2-3 पूज्य दिगम्बर मुनिश्री भी वहाँ विराजमान थे। पूज्य स्वामी जी ने स्वर्ण कलश हाथ में देते हुए बताया कि यह स्वर्ण कलश भगवान के अभिषेक हेतु बनकर आया है। 01 किलो से अधिक वजन है सबसे पहले आप ही अभिषेक करें। मैं इस सम्मान से रोमांचित था। अभिषेक का सुख तो था ही किन्तु इतने वजनी स्वर्ण कलश से अभिषेक का सौभाग्य प्राप्त करना विशेष महत्त्वपूर्ण था। मैंने तो इतना वजनी स्वर्ण कलश जीवन में कभी देखा भी नहीं था फिर उससे स्वयं अभिषेक करना अविस्मरणीय एवं रोमांचित करने वाला था। यह स्वामी जी का वात्सल्य ही था वरना कोई भी श्रेष्ठी इतने बड़े स्वर्ण कलश से प्रथम कलश करने का सौभाग्य लेना चाहेगा।

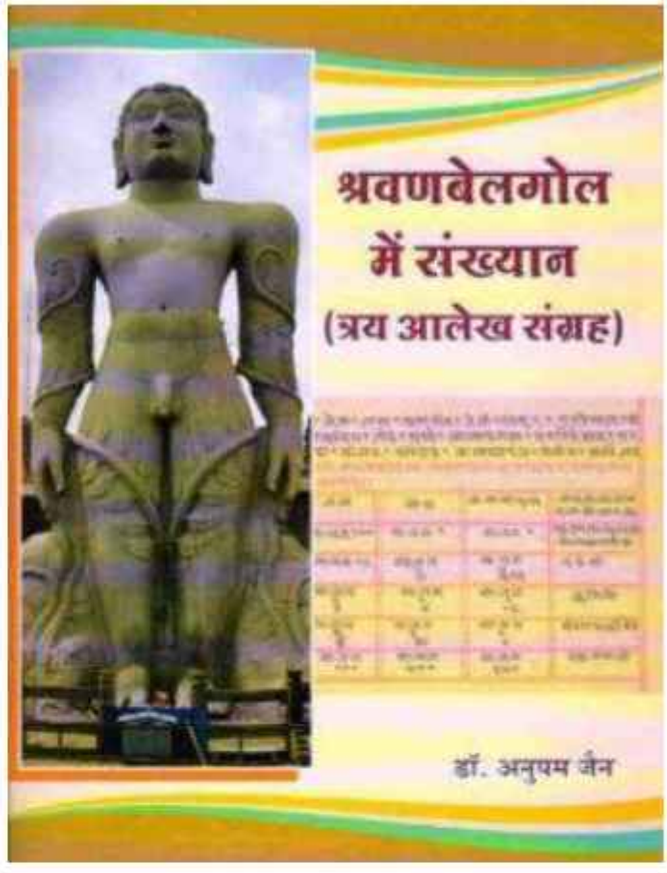

3 मई 1949 को कर्नाटक के जैन तीर्थ वरांग के श्रेष्ठी श्री चंद्रराज जी एवं माँ श्रीमती कांते जी के घर जन्में श्री रत्न वर्मा ने 12.12.1969 को भट्टारक दीक्षा लेकर परम्परा में प्रवेश किया। 19.04.70 को इस महान तीर्थ के उत्तराधिकारी के रूप में पट्टाभिषेक सम्पन्न हुआ। 1981, 1993, 2006 एवं 2018 के मस्तकाभिषेक आपके प्रबन्ध कौशल का जीवन्त दिग्दर्शन कराते हैं। 23 मार्च 2023 को आपने इस नश्वर शरीर को छोड़कर अनन्त की ओर प्रयाण किया। ब्राह्मी, विद्यापीठ तथा राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन केन्द्र (NIPSAR) आपके विद्यानुराग के स्मारक हैं। राष्ट्रीय प्राकृत वि.वि. हेतु आप सतत यावत् जीवन प्रयत्नशील रहे। इसकी स्थापना ही स्वामी जी के प्रति हमारी एवं सम्पूर्ण भारत की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पूज्य महास्वामी जी के प्रति हमारी श्रद्धांजलि यह भी होगी कि हम प्राचीन जैन आगमों, प्राचीन पांडुलिपियों एवं आगमों की भाषा प्राकृत के पठन-पाठन को बढ़ावा देवें। प्राचीन ग्रन्थों में छिपे ज्ञान को प्रकट कर दिगम्बरत्व के गौरव को बढ़ायें।

समाधिस्थ आत्मा के चरणों में कोटिशः नमन।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

हृदय में सदा जीवंत रहेंगे पूज्य भट्टारक स्वामी जी

डॉ. अरिहन्त कुमार जैन, मुंबई

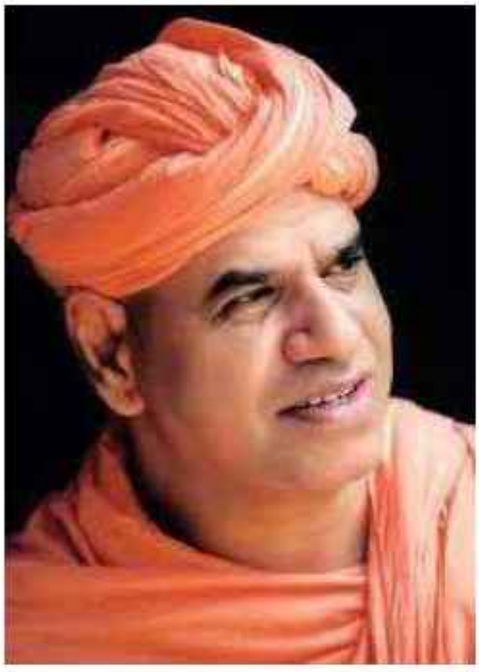

जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी एक ऐसे बहुआयामी महान् व्यक्तित्त्व थे, जिन्होंने जैन धर्मदर्शन, संस्कृति, पुरातत्व, कला, प्राच्य भाषा एवं साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में एक महानायक के रूप में भूमिका निभाई और अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। आप श्रेष्ठ सन्त के रूप में संयमित एवं स्वाध्यायमयी व्रतनिष्ठ जीवन शैली को जीते रहे। आपने गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक जैसे चार महाकुम्भ जैसे अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम, सम्पूर्ण देश की समाज को जोड़कर, अपने कुशल नेतृत्व के माध्यम से, महमस्तकाभिषेक सफलतापूर्वक सम्पन्न करा कर, नित नए कीर्तिमान स्थापित किए। इस पावन उपलक्ष्य में श्रवणबेलगोल पधारे अनेक दिगंबर जैन आचार्यों के बड़े-बड़े संघों, जिनमें हज़ार से भी ज्यादा पिच्छिधारी संयमियों की चर्या के अनुसार आपने विनयपूर्वक उनकी की समुचित व्यवस्था का ध्यान रखा। पूज्य स्वामी जी ने साधनारत होते हुए भी समाज कल्याण हेतु चिकित्सालयों को बनवाकर उनका समुचित संचालन करने, छात्र- छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज आदि शिक्षा संस्थानों का संचालन एवं लौकिक शिक्षा के साथ-साथ प्राच्य प्राकृत भाषा, हस्तलिखित पांडुलिपियों, शिलालेखों का श्रुतकेवली एजुकेशन ट्रस्ट, राष्ट्रीय प्राकृत संस्थान के माध्यम से संरक्षण एवं संवर्धन करने जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं, जिनके लिए शब्द भी सीमित पड़ जाएँ।

पूज्यस्वामी जी के साथ कई अविस्मरणीय स्वर्णिम यादें जुड़ी हैं। मेरे जीवन पर उनका बहुत प्रभाव रहा है। वैसे तो वे सभी के अपने थे, परंतु विद्वान् के रूप में प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी (पूर्व अध्यक्ष, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) एवं माताश्री श्रीमती मुन्नी जैन, वाराणसी से उनका विशेष अपनत्व के कारण मुझे भी बाल्यकाल से ही समय-समय पर उनका सानिध्य,

स्नेह, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सरस्वती पुत्र विद्वानों का वो बहुत बहुमान करते थे। पिताजी से तो उनकी घंटों तत्त्वचर्चा तथा किन्हीं-किन्हीं विषयों पर परस्पर परामर्श आदि चलता रहता था।

मुझे याद है कि बाल्यकाल में ही उन्होंने मुझे देखकर अपनी अलौकिक प्रज्ञा से कहा था कि भविष्य में आप प्राच्य विद्या एवं भाषा के क्षेत्र में अच्छे काम करेंगे। उस वक्त शायद मैं इन शब्दों के वास्तविक अर्थ से भी परिचित नहीं था। आज शायद उनके वचनों की ही सिद्धि का प्रताप है कि मैं शिक्षा के क्षेत्र में हूँ, और सतत् रूप से सीखते हुए जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा तथा साहित्य की सेवा का प्रयास कर रहा हूँ। अंग्रेज़ी में प्रकाशित 'प्राकृत टाइम्स इंटरनेशनल न्यूज़लेटर' उसी प्रयास का एक हिस्सा है, जिसके लिए स्वामी जी ने भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया था।

भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामी जी का भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली पधारना हुआ, इस दौरान उनका वाराणसी में तीन दिन का प्रवास रहा। इन तीन दिनों में पूरा एक दिन वे हमारे 'अनेकान्त विद्या भवन' में रहे। यह हमारे लिए अविस्मरणीय क्षण था कि स्वामी जी घर पधारे, हम सभी को आहार देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं आपने घर के पुस्तकालय में स्वाध्याय एवं घंटों चर्चा की। आपने दक्षिण से ही प्रतिभावन छात्रों को पिताश्री के संरक्षकत्व एवं मार्गदर्शन में विद्याध्यायन हेतु श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी भेजा। वही छात्र जैन दर्शन, प्राकृत एवं जैनागम के उच्चकोटि के विद्वान बनकर आज दक्षिण भारत के अर्हन्तगिरि, कनकगिरि, हुमचा आदि के भट्टारक स्वामी जी हैं, जो कुशलता एवं सफलता पूर्वक सिद्धक्षेत्रों के संरक्षण के साथ-साथ क्षेत्र का विकास भी कर रहे हैं। हमें हर 1-2 वर्षों में भगवान बाहुबली के

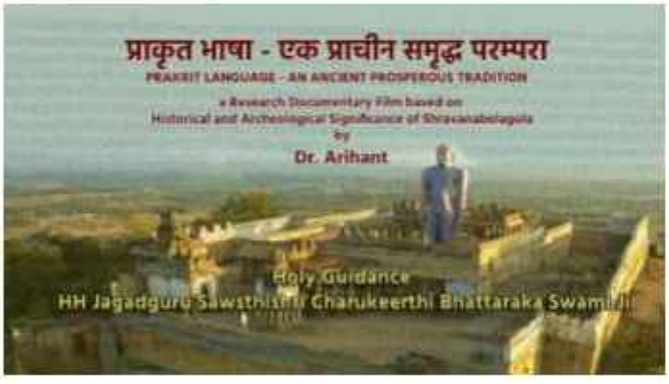

दर्शनार्थ श्रवणबेलगोला जाने का तथा स्वामी जी से मार्गदर्शन का अवसर प्राप्त होता रहा। इस बीच पिताश्री को गोम्मटेश्वर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

सन् 2006 के इसी महामस्तकाभिषेक में पूज्य स्वामी जी ने पिताश्री प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी वाराणसी को 'अखिल भारतीय जैन विद्वद् सम्मेलन' के संयोजकत्व तथा ज्येष्ठ भ्राता डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, (श्रीलाल बहादुर राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) को सहसंयोजकयत्व का दायित्व प्रदान किया, जो कि ऐतिहासिक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समय पिताश्री 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वद् परिषद्' के अध्यक्ष थे। इसी दौरान मेरे भीतर के हुनर को उन्होंने सर्वप्रथम अवसर प्रदान किया। मुझपर विश्वास जताकर मुझे श्रवणबेलगोला एवं राष्ट्रीय प्राकृत संस्थान पर डाक्यूमेंट्री फ़िल्म के निर्देशन की प्रेरणा तथा सहयोग प्रदान किया। इसी समय उनके सानिद्ध्य में रहकर उनके महान बहुआयामी व्यक्तित्त्व को मैं करीब से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। श्रवणबेलगोला के इतिहास, पुरातत्त्व तथा प्राकृत भाषा की महत्ता को बताती आपके मार्गदर्शन में हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषा में बनी "प्राकृत भाषा - एक प्राचीन समृद्ध परंपरा" (https://youtu.be/aiiuA0sd8Sc) नामक इस रिसर्च डाक्यूमेंट्री फ़िल्म को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्ममहोत्सवों में भी प्रदर्शन के लिए चुना गया तथा पूरे महामस्तकाभिषेक के कार्यक्रम के समय महीनों तक इसे जगह-जगह प्रदर्शित किया गया।

सन् 2016 आते-आते 2018 के महामस्तकाभिषेक के कार्यक्रमों की तैयारियाँ शुरू हो गईं। पूज्य स्वामी जी ने पुनः पिताश्री को याद किया और

महामस्तकाभिषेक 2018 के मंगलाचरण के रूप में सबसे पहले कार्यक्रम राष्ट्रीय संस्कृत विद्वद् सम्मेलन हेतु पुनः पिताश्री प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी को मुख्य संयोजकत्त्व तथा डॉ अनेकान्त जी, नई दिल्ली को संयोजकत्त्व का दायित्व दिया। अब तक मैं बड़ा हो गया था, अतः कार्यकर्त्ता के रूप में मुझे भी इस विद्वद् सम्मेलन की तैयारी करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने मिलकर पूरे मनोयोग से इस हेतु स्वामी जी के मार्गदर्शन में कार्य किया। यह पहला अवसर था जब इस त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत विद्वद् सम्मेलन में पूरे देश के संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपति, पूर्व कुलपति, पद्मश्री एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ मूर्धन्य विद्वानों ने हिस्सा लिया और यह सम्मेलन ऐतिहासिक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रमों के इसी क्रम में महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें पूज्य स्वामी जी ने हमारी माँ डॉ. मुन्नी जैन जी को ब्राह्मी लिपि के अध्ययन-अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु 'आदर्श महिला प्रशस्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया। आपने बड़ी बहन डॉ. इन्दु जैन राष्ट्रगौरव को नवीन संसद के भूमिपूजन में प्राकृत गाथाओं के सस्वर पाठन हेतु हर्ष व्यक्त कर आशीर्वाद दिया, जो कि पूरे देश में चर्चा का विषय बना। हमने महामस्तकाभिषेक में जलाभिषेक करने का भी सौभाग्य प्राप्त किया। इस प्रकार अनेक कार्यक्रमों के मूल में रहकर स्वामी जी ने पूरे महामस्तकाभिषेक का प्रतिनिधित्व किया।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के आशीर्वाद से 2019 में पिताश्री प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी को प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में महनीय योगदान हेतु राष्ट्रपति पुरस्कार २०१८ से तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान,

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य में महनीय योगदान हेतु 'विशिष्ट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् हम पुनः भगवान बाहुबली के दर्शनार्थ श्रवणबेलगोला गए। पूज्य स्वामी जी ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया। २०२० के कोरोनाकाल में पिताजी ने राष्ट्रीय प्राकृत शोध संस्थान (श्रवणबेलगोला) के प्राकृत डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स को ऑनलाइन पढ़ाया, जिसमें देश-विदेश के सैकड़ों लोगों ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। इन कक्षाओं का संचालन जैन फ़ाउंडेशन (बंगलुरु) ने ऑनलाइन प्लैटफ़ार्म के माध्यम से आयोजित करके किया। 2021 में मेरी नियुक्ति बंगलुरू स्थित जैन यूनिवर्सिटी में हो गयी। इसके हेतु भी बीच -बीच में श्रवणबेलगोल जाकर स्वामी जी से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस बीच जैन यूनिवर्सिटी द्वारा नेशनल जैन सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी जी का मंगल सानिध्य प्राप्त करने हेतु हमने बहुत प्रयास किये, लेकिन स्वास्थ्य कारणों से वह नहीं आ सके। उन्होंने उस नेशनल सेमिनार की सफलता हेतु अपना आशीर्वचन और मंगल संदेश हमें प्रेषित किया।

इसके बाद भी हमारा सपत्नीक (श्रीमति नेहा) श्रवणबेलगोल जाना हुआ। हमने उन्हें प्राकृत टाइम्स के अब तक के सारे अंकों की प्रतियां

भेंट की। उन्होंने हम दोनोंकों आशीर्वाद देते हुए जैनविद्या तथा प्राकृत भाषा के लिए स्वतंत्र अकादमी की स्थापना करने के लिए प्रेरित भी किया। उसके बाद मेरी नियुक्ति सोमैया विद्याविहार यूनिवर्सिटी, मुम्बई में हो गयी, जिसके लिए उनका पुनः आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

उनका यूँ जाना जैन समाज के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। ये विश्वास करना मुश्किल है कि वह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वे और उनकी प्रेरणाएँ हम सभी के हृदय में सदा जीवंत रहेंगी। हमें विश्वास है कि पूज्य भट्टारक महास्वामी जी के द्वारा चयनित और उन्हीं के पट्ट पर अभिषिक्त पूज्य आगमकीर्ति जी, जो कि अब अभिनव 'चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी' बनकर इन्हीं के समान विकास के कार्य करेंगे। पूज्य स्वामी जी को उनकी उत्कृष्ट साधना के फलीभूत सद्गति प्राप्त हो, इन्हीं भावनाओं के साथ पूज्य स्वामी जी को शत-शत नमन..भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि

न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बनाए गए

संपूर्ण जैन समाज में आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज का जीवन वृत्त चारित्र चक्रवर्ती लिखने वाले पंडित सुमेरूचंद्र जी दिवाकर सिवनी जैन समाज के गौरव रहे हैं उसी परिवार ने निरंतर जैन समाज को कई प्रतिभाएं प्रदान की हैं,आपके परिवार के जबलपुर के प्रसिद्ध शिक्षाविद् स्व .डॉ सुशील चंद दिवाकर के सुपुत्र, श्री सिद्धार्थ दिवाकर के अनुज, एडवोकेट राहुल दिवाकर के चाचा प्रीतिंकर दिवाकर को राष्ट्रपति भारत सरकार की अनुशंसा पर इलाहाबाद हाई कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है।

आपके परिवार ने शैक्षिक, प्रशासनिक, न्यायिक, धार्मिक, आदि अनेकों क्षेत्रों में प्रतिभाओं को दिया है। आपके परिवार के श्री ऋषभ जी दिवाकर पुलिस महानिदेशक मध्यप्रदेश, एडवोकेट श्री अभिनंदन जी दिवाकर ,सुप्रशिद्ध अधिवक्ता सिवनी, पंडित श्री श्रेयांस कुमार जैन सिवनी,श्री यशोधर दिवाकर कार्यपालन यंत्री जल संसाधन ,श्री नरेश दिवाकर पूर्व विधायक व केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त महाकोशल विकास प्राधिकरण जबलपुर के अध्यक्ष, प्रोफेसर डॉ इंद्रा जैन दमोह, प्रोफेसर श्री रविंद्र दिवाकर सिवनी आदि परिवारजनों का कार्य उल्लेखनीय हैं। दिवाकर परिवार की इस उपलब्धि पर बहुत बहुत शुभकामनाएं।

राजेंद्र जैन "महावीर"

क्या लिखें क्या छोड़ें -
एक युग थे - परम पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महा स्वामी जी

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

जैन जगत में दिगम्बर-श्वेताम्बर, बीस पंथ-तेरह पंथ, तारण पंथ,मुमुक्षु कहान पंथ, प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांति सागर जी महाराज परम्परा, अंकलीकर आचार्य श्री आदिसागर जी परम्परा, आचार्यश्री शांतिसागर जी छाणी महाराज की परम्परा उत्तर- भारत, दक्षिण -भारत अन्तर्राष्ट्रीय जैन जगत में यदि एक शब्द में कहे कि अनेकांत-स्याद्वादवादी जैन यदि कोई थे तो वे परमपूज्य जगदगुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामी श्रवणबेलगोला कर्नाटक ही थे। अपनी चर्या के प्रति दृढ़ निश्चमी, गोम्टेश भगवान बाहुबली के प्रति अपूर्व स्नेही , प्राणी-मात्र के प्रति संवेदनशील, शिक्षा स्वास्थ्य, समुन्नति के प्रतीक, प्रत्येक पार्टी, दल के पूज्यनीय, जन जन में आदर भाव के प्रतीक, श्रवणबेलगोला तीर्थ को अन्तरराष्ट्रीय सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण करने वाले ,शून्य से शिखर तक की यात्रा में अपने तन-मन को लगाकर देश के समस्त आचार्य संघ मुनि संघ के साथ विद्वान पत्रकार ,सम्पादक ,श्रेष्ठी आर्थिक सम्पन्न ,आर्थिक विपन्न सभी के लिए अपनत्व भाव रखने वाले युग श्रेष्ठ व्यक्तित्व जिनके बारे में क्या लिखे- क्या नहीं लिखे मन में अश्रुपूरित भाव के साथ इतने विचार आ रहे है कि कैसे कह दूं ,कैसे मान लू कि परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति जी भट्टारक महास्वामीजी ने 23 मार्च 23 की प्रातः बेला में अपनी देह को त्याग कर महाप्रयाण कर लिया। नूतन नववर्ष के बाद पहले दिन गुरुवार को वे हम सबको जैन दर्शन का शाश्वत सत्य बताते हुए आत्म दर्शन की महायात्रा में चले गए। जब से खबर मिली है सोच रहा हूँ क्या लिखूँ कहा से प्रारम्भ करू कुछ समझ नहीं आ रहा फिर भी मैं कुछ बातें कम शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश कर अपने लेखकीय उत्तरदायित्व को पूर्ण करने का प्रयास कर रहा हूँ-

- १.जन्म 3 मई 1949 तीर्थक्षेत्र वारंग कर्नाटक
- 2. जन्मनाम रत्न वर्मा
- 3. श्रावक श्रेष्ठ श्रीमती कांते श्रीचंद्रराज के घर शुभ नक्षत्र, शुभ बेला में जन्म।
- 4. धार्मिक संस्कार हेतु हुमचा मठ में अध्ययन हेतु प्रवेश।
- 5.श्रवणबेलगोला तीर्थ के भट्टारक जी पूज्य श्री भट्टाकलंक जी को अपने उत्तराधिकारी की आवश्यकता।
- 6.अनेकों कुण्डलियों में रत्न वर्मा के प्रति जगा विश्वास
- 7. 12 दिसम्बर 1969 में भट्टारक दीक्षा।
- 8. 8 अप्रैल 1970 को वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर जन्म कल्याणक अवसर पर श्रवणबेलगोला श्री क्षेत्र के उत्तराधिकार के रूप में पट्टाभिषेक।
- 9.आर्थिक रूप से अति विपन्न श्रवणबेलगोला तीर्थ को समुन्नत बनाने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी मात्र 20 वर्ष की उम्र में।
- 10.तीर्थ पर आर्थिक बैलेंस नहीं, सुविधाएँ नहीं ऐसे अवसर पर 20 वर्षीय युवा पर आई अनेकोंजिम्मेदारियाँ

- 11.पहले अध्ययन करने का निर्णय देश के श्रेष्ठ विद्वानों, आचार्यों के साथ जैनदर्शन का अध्ययन
- 12. जैन धर्म के ज्ञाता बने 1976 में सिंगापुर की यात्रा कर धर्म प्रभावना।
- 13. अमेरिका,वर्मा, अफ्रीका , इंग्लैंड, थाईलैंड में धर्म प्रभावना।
- 14.लौकिक पढ़ाई मे अव्वल, मैसूर विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में मास्टर ऑफ आर्ट।
- 15.कन्नड़ के साथ भाषा हिन्दी, संस्कृत ,प्राकृत, अंग्रेजी व हिन्दी में साहित्य विशारद, संस्कृत साहित्य में विशारद।
- 16.जन मंगल कलश प्रवर्तन व भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण कल्याणक में अपना उल्लेखनीय योगदान।
- 17.आचार्य श्री विद्यानंदजी के सान्निध्य से आयोजनों की रूपरेखा में योगदान।
- 18.गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा के एक हजार वर्ष पूर्ण 1981 में।
- 19. महामस्तकाभिषेक के साथ भगवान की प्रतिमा सहस्राब्दी महोत्सव का आयोजन।
- 20. अभूतपूर्व प्रतिमा का महामहोत्सव व 1981 में सहस्राब्दी महोत्सव 20 वी सदी का अनुपम आयोजन बनाया।
- 21. सम्पूर्ण विश्व में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की प्रभावना व अन्तरराष्ट्रीय मीडिया में चर्चा के साथ विश्व भर से आये दर्शनार्थी
- 22.1981 के सफल आयोजन की ऐसी छाप बनी कि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 'कर्मयोगी' की उपाधि से सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया।
- 23.सम्पूर्ण देश ऐसी अद्भुत धर्म प्रभावना हुई कि देश के ग्राम - ग्राम,

नगर-नगर में भगवान बाहुबली की प्रतिमाएँ स्थापित होना प्रारंभ हुई।

- 24.1988 में इंग्लैंड के शहर लेस्टर में भगवान बाहुबली की प्रतिमा का पंचकल्याणक पूज्य स्वामी के मार्गदर्शन में हुआ।
- 25. 1981 के महोत्सव में 149 संतों का सान्निध्य।
- 26.1981 से 1992 तक श्रवणबेलगोला व आसपास 20 से अधिक शिक्षण संस्थाएँ जिनमें विद्यालय, महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक ,इंजीनियरिंग, नर्सिंग कालेज आदि का निर्माण व सफल संचालन।
- 26. 1993 में 12 वर्षीय महामस्तकाभिषेक हेतु, आचार्य श्री वर्धमान सागर जी को आमंत्रण।
- 27.1993 में गोम्टेश के महामस्तकाभिषेक में 250 से अधिक पिच्छी धारी स्वामीजी के वात्सल्य आमंत्रण पर पहुँचे।
- 28. प्राकृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्रवणबेलगोला की स्थापना।
- 29.कन्नड़ ग्रंथों, प्राकृत ग्रंथों का अनुवाद धवला - जय धवला ग्रंथों का अनुवाद कराकर जिनवाणी की अनुपम सेवा।
- 30. बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के माध्यम से प्राकृत भाषा को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प
- 31.श्रवणबेलगोला में यात्री सुविधाओं का विस्तार।
- 32.भारत सरकार व कर्नाटक सरकार से हर संभव मदद हेतु कार्य योजनाएँ
- 33. 2006 में पुनः स्वयं के निर्देशन में तीसरे महामस्तकाभिषेक का आयोजन।
- 34. आयोजन में संतों की निरंतर बढ़ती उपस्थिति पहुँचे लभगग 300 से अधिक पिच्छी धारी साधु।
- 35. आयोजन पूर्व श्रवणबेलगोला को आदर्श ग्राम बनाकर खुले में शौच से मुक्त करने के साथ ग्राम का चहुँमुखी विकास कराया।
- 36.गोम्मटेश बाहुबली बाल चिकित्सालय का निर्माण आर. के. मार्बल परिवार की ओर से।
- 37.मोबाईल त्याग के साथ आदर्श चर्या का अनुपम उदाहरण व स्वकल्याण की जागरूकता के प्रति सचेत।
- 38.जन-जन तक स्वास्थ्य सुविधा हेतु मोबाईल अस्पताल।
- 39.कर्नाटक के जन-जन में बाहुबली भगवान के प्रति समर्पण का भाव जगाकर अहिंसा धर्म की प्रभावना।
- 40.गोम्मटेश भगवान बाहुबली की प्रतिमा की सुरक्षा के लिए आस-पास के पाँच किलो मीटर एरिया में खनन ब्लास्टिंग कार्य पर रोक लगाने मे सफलता।
- 41.श्रवणबेलगोला पहुंचने वाले साधु संतों का अभूतपूर्व स्वागत के साथ आगवानी व अनुपम् विनम्रता भाव।
- 42. बड़े छोटे, सभी विद्वानों के प्रति अनुपम वात्सल्य के साथ उनका यथायोग्य सम्मान मेरे विचार से केवल श्रवणबेलगोल के स्वामी जी ही करते रहे।
- 43.2018 का महामस्तकाभिषेक अन्तर्राष्ट्रीय जगत के लिए मिसाल।
- 44. अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में जैनदर्शन दिगम्बरत्व व गोम्मटेश के प्रति आदर भाव।
- 45.गोम्मटेश के संन्देश : अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति ,ध्यान से सिद्धि को जन-जन तक पहुंचाने के सफल कर्मयोद्धा।
- 46.महामस्तकाभिषेक हेतु बेंगलौर से श्रवणबेलगोला रेलवे लाईन का शुभारंभ कराया।
- 47. 2018 के महामस्तकाभिषेक में रिकार्ड तोड़ 35 आचार्य के साथ लगभग 400 पिच्छी धारी संतों का सान्निध्य का अनुपम उदाहरण।
- 48. स्वामीजी का स्वप्न श्रवणबेलगोला में प्राकृत विश्वविद्यालय का काम प्रारम्भ हुआ।
- 49.श्रवणबेलगोला के रत्न के रूप में कर्नाटक सरकार ने भगवान महावीर शांति पुरस्कार व दस लाख की राशि से सम्मान।
- 50.2018 मे महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्षा के रूप में श्राविका शिरोमणि श्रीमती सरिता एम. के. जैन चेन्नई का मनोनयन, इतिहास में पहली बार किसी महिला को यह दायित्व सौंपा।
- 51.यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'तं गोम्टेश पणमामि णिच्च के साथ स्वामी जी को महान व्यक्तित्व बताया।
- 52.परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागाजी महाराज जिन्होंने लगातार तीन बार महामस्तकाभिषेक में सान्निध्य प्रदान किया उनके प्रति कहते है कि आयोजन की सफलता उनके नाम जुड़ने से ही हो जाती है उनका निश्छल भाव उन्हें गोम्मटेश भगवान बाहुबली के दर्शन कराता रहा और सम्पूर्ण जगत को दिगम्बरत्व का दिग्दर्शन कराता रहा है, ऐसे व्यक्तित्व से जो धर्म प्रभावना हुई है वह अतुलनीय हैं।

ऐसे अभूतपूर्व व्यक्तिव को कुछ शब्दों में यह विनयांजलि सादर समर्पित है। विगत 20वर्ष से अनेकों बार उनका सान्निध्य आशीर्वाद मेरे सम्पूर्ण परिवार को प्राप्त हुआ। मेरे आदर्श,सम्पूर्ण समाज की धरोहर जिनके आगे सारी उपमाएँ व्यर्थ है। केवल स्वामी जी नाम उल्लेख से सम्पूर्ण भारतवर्ष में केवल "परमपूज्य जगतगुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी महास्वामी का नाम उभर कर सामने आता है। ऐसे पूज्य स्वामी जी का महाप्रयाण कर जाना एक युग का अवसान हैं।

भगवान गोम्मटेश्वर से प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही मुक्तिवधु का वरण करें।

सुख शांति प्रदायक भगवान महावीर स्वामी के पावन संदेश

- डॉ. नरेंद्र जैन, सनावद

जैन धर्म में वर्तमान चौबीसी के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। जिन्हें वर्तमान शासन नायक भी कहा जाता है। तीर्थंकरों के संबंध में कहा जाता है - जो संसार सागर को पार करके और दूसरों को पार कराने के लिए कार्य करते हैं वे महान पुरुष तीर्थंकर कहलाते है। तीर्थंकर वह व्यक्ति बनता है जो लोक कल्याण की भावना के साथ दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारण भावनाओं का अत्यंत विशुद्ध भाव से चिंतन कर उनका अनुकरण करते हैं। भगवान महावीर स्वामी का जन्म ऐसे ही विशुद्ध परिणामों का फल था।

भगवान महावीर स्वामी का जन्म आज से 2621 वर्ष पूर्व इसी भरतक्षेत्र के विदेह नामक देश संबंधी कुंडपुर नगर के राजा सिद्धार्थ तथा प्रिय कारिणी (त्रिशला देवी) के नंद्यावर्त नामक महल में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन शुभयोग में हुआ था। जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारी भगवान महावीर स्वामी का सौधर्म इंद्र ने ऐरावत हाथी पर विराजमान कर देवों से घिरी हुई पांडुक शिला पर ले जाकर जन्माभिषेक कर वर्धमान नाम रखा और उसकी शूरवीरता की अत्यंत प्रशंसा कर स्तुति की। वीर,अतिवीर,सन्मति, वर्धमान और महावीर के नाम से प्रसिद्ध भगवान महावीर स्वामी की स्तुति जैन ग्रंथों में इस प्रकार से की गई है।

नमः श्री वीरनाथाय भव्याम्भोरुहभास्वते।
सुरानंद सुधास्यद स्वाद संवेदनात्मने - प्रबोध सार २

भगवान वीरनाथ स्वामी सर्वोत्कृष्ट अनंतसुख रूप अमृत से उत्पन्न हुए स्वाद का सदा अनुभव करते रहते हैं और भव्य रूपी कमलों को प्रफुल्लित करने के लिए जो सूर्य हैं ऐसे श्री वीर नाथ स्वामी के लिए सदा नमस्कार करता हूँ।

वर्धमानः श्रियं देवादवर्धमानां शिवोत्तराम।
येन प्रवर्तित तीर्थ भव भ्रम विनाशनम् ।।

अर्थात जिन भगवान महावीर स्वामी ने संसार के परिभ्रमण का नाश करने वाले तीर्थ की प्रवृत्ति की है, ऐसे वे भगवान वर्धमान स्वामी प्रति समय बढ़ने वाली और मोक्ष को प्राप्त कर होने वाली लक्ष्मी को प्रदान करें।

प्रत्येक धर्मात्मा मनुष्य का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने बतलाया कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र रूप रत्नत्रय का पालन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसके लिए तीर्थंकरों, अरहंत, सिद्ध पर यथार्थ श्रद्धान, भगवान जिनेंद्र देव की वाणी पर विश्वास तथा सम्यग्चारित्र के पालन के लिए राग, द्वेष, मोह, तथा हिंसा,झूठ,चोरी, कुशील, परिग्रह रूप पांच पापों का त्याग आवश्यक है। पांच पापों से बचने के लिए मन, वचन और काय की शुद्धता और अहिंसा तथा दया धर्म के पालन पर जोर दिया गया है महावीर स्वामी ने कहा –

दयामूलं यतो धर्मः सत्वानां शान्तिदः सदा।
शिव सौधस्य सोपानं सर्वैश्वर्य प्रसाधनम्।।

---प्रबोध सार

अर्थात समस्त जीवों की दया करना ही धर्म है क्योंकि दया ही समस्त प्राणियों को सदा सुख पहुंचाने वाली है। यही मोक्ष महल की सीढ़ी है और समस्त संपदाओं को देने वाली है। धर्म का पालन करने के लिए आपने बताया कि संसार में रहने वाले प्राणी भव बंधनों से मुक्त होने के लिए तीन रूपों में धर्म का पालन करें। आचरणात्मक शुद्धि के लिए अहिंसा, आत्मनियंत्रण के लिए संयम और अष्टकर्मों के नाश के लिए तप साधना करें। तप साधना से ही तन और मन दोनों के बंधन समाप्त होते है। शरीर और रोगों से बचने के लिए शरीर के बंधन से मुक्त होना आवश्यक है। जब तक शरीर का बंधन है तब तक जीव कर्म बंधनों से मुक्त नहीं हो सकता, अतः उन्होंने उपदेश दिया कि तन मिलता है तो मन शुद्ध रखकर तपस्या करो ताकि जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त हो सकें। भगवान महावीर स्वामी की इस प्रेरणा का ही सुपरिणाम है कि आज भी हजारों व्यक्ति परिग्रह का त्याग कर दिगंबर मुद्रा धारण कर तप साधना करते हुए मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं तथा अहिंसा और शांति का संदेश दे रहे हैं।

भगवान महावीर स्वामी की शिक्षा के पाँच मुख्य केंद्र बिंदु हैं - अहिंसा,सत्य,अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। इन्हें जैन धर्म में पाँच महाव्रत कहा जाता है। भगवान महावीर स्वामी ने जब देखा कि मनुष्य से संसार के समस्त प्राणी भयभीत हैं, पशुओं की हिंसा हो रही है,यज्ञ के नाम पर पशुबलि दी जा रही है, नारियों का यथोचित सम्मान नहीं है, इन कुरीतियों को सुधारने तथा भयमुक्त समाज की स्थापना करने के लिए उन्होंने अहिंसा और जीव दया की भावना पर जोर दिया और मानव को प्रेरणा दी कि यदि आत्मा के निकट रहकर मोक्ष प्राप्त करना है तो जीव हिंसा तो होनी ही नहीं चाहिए तथा मन वचन और काय से भी आरंभी, उद्योगी, विरोधी और संकल्पी हिंसा न हो इसका सार्थक प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से तन और मन दोनों से ही आप सभी बंधन मुक्त होंगे। मन की सोच को महत्वपूर्ण बताते हुए भगवान महावीर स्वामी ने बताया कि मन के कारण ही व्यक्ति बंधन बद्ध तथा बंधन मुक्त होता है। संसार में रहकर यदि सत्य का अनुकरण करेगा तो चोरी, छल कपट, बेईमानी से बचेगा, इच्छाओं को रोककर परिग्रह का त्याग करेगा और इंद्रियों पर नियंत्रित रखेगा तो पाँच पापों से मुक्त रहकर सन्मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त करेगा। भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा आदि पाँच महाव्रत मानव ही नहीं जीव मात्र के लिए कल्याण कारक, सुख कारक तथा शांति प्रदायक हैं। अतः किसी कवि ने उनकी स्तुति करते हुए लिखा है --

सुख शांति विधायक वीर प्रभु आदर्श तुम्हीं हित कर्ता हो।
जगदीश विज्ञ बिन राग द्वेष तुम ही जंग संकट हर्ता हो।।

आज जबकि चारों ओर अशांति और अन्याय का वातावरण है, मनुष्य जीवनमूल्यों को न समझकर स्वार्थ में लिप्त है, विनाशक हथियारों बनाने की होड़ लगी है, स्वार्थ का बोलबाला है, ऐसे में भगवान महावीर

स्वामी का सर्वोदयवाद एवं कर्मवाद के सिद्धांत आज भी अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी का कर्मवाद प्रेरणा देता है कि धर्म सम्मत कार्य करो ताकि अशुभ कर्म बंध न हों तथा जीव मात्र का विकास एवं हित हो। सर्वोदयवाद का अर्थ है सभी के उदय, अभ्युदय और कल्याण की कामना। वर्तमान के शासक भी सबका साथ सबका विकास की बात कर जनमानस को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहे हैं उन्हें इसकी प्रेरणा भगवान महावीर के सर्वोदयवाद के सिद्धांत से ही मिली होगी। अतः कहा जा सकता है कि भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत उस युग में ही नहीं वरन वर्तमान युग में हिंसा, शांति,सुख और समृद्धि में कारगर साबित होंगे तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए भी सार्थक सिद्ध होंगे।

मुंबई में भव्य रथयात्रा निकालकर मनाया तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव

जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर मुंबई के विभिन्न स्थानों पर धूमधाम से श्री जी की प्रतिमा को रथपर विराजमान कर नगरी में शोभायात्रा निकाली गई। रथयात्रा में सामूहिक रूप से जैन श्रद्धालुओं ने सम्मलित होकर जैन मंदिर, गुलालबाड़ी, श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, भूलेश्वर, श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, कालबादेवी एवम् श्री दिगम्बर जैन सीमंधर जिनालय, जवेरी बाजार चारो मंदिरों के सामुहिक रूप से रथयात्रा कर धर्मप्रभावना हुई।

इस रथयात्रा में भूलेश्वर मंदिर में विराजमान **आचार्य डॉ. श्री प्रणाम सागर जी महाराज ससंघ**, गुलालबाड़ी मंदिर में विराजमान **आर्यिका श्री जिनदेवी माताजी ससंघ** का सानिध्य प्राप्त रहा। बैंडबाजों के साथ आगे आगे आचार्य श्री ससंघ व माताजी ससंघ चल रही थी उसके पीछे भूलेश्वर मंदिर का रथ, पश्चात गुलालबाडी के रथ तथा उसके बाद हजारों श्रद्धालु गण जिसमें महिलायें पीले वस्त्रों व पुरुष सफेद वस्त्रों में नारों के साथ धर्मप्रभावना में सम्मिलित हुए। गली गली में भगवान जी की आरती व अर्घ समर्पित किए गए।

शोभायात्रा में श्री शिखरचंद पहाड़िया, श्री वसंतलाल एम दोशी, श्री के.सी.जैन, श्री डी.सी. जैन, श्री एस.पी.जैन, श्री मनोज जैन, श्री दिनेश जैन, श्री प्रवीण जैन, श्री सुरेश हिंसावत, श्री सुरेश पहाड़िया, श्री अजित गांधी, श्री अशोक जैन, श्री देवेन्द्र जैन, श्री नीरज जैन सहित सभी मंदिरों के ट्रस्टीगण एवं हजारों श्रद्धालुओं ने सम्मलित होकर धर्म लाभ लिया।

तीर्थंकर महावीर की अहिंसक क्रांति से ही विश्व में शांति संभव

भगवान महावीर की अहिंसा सार्वभौमिक , सर्वकालिक है

- सुनील जैन संचय, ललितपुर

समय का चक्र परिवर्तनशील है। वह एक जैसी स्थिति में कभी नहीं रहता, उतार-चढ़ाव अच्छाई-बुराई, संगति-विसंगति, अनुकूलता-प्रतिकूलता, हानि-लाभ, उन्नति-अवनति, दिन-रात का क्रम बना ही रहता है। जो इन विषमताओं में भी समरसता से जीना जानता है वही विश्व को सम्यक् दिशाबोध दे सकता है। जो ऐसे विषम समय के गतिचक्र को पहिचानकर उसे सरस बना देते हैं, उनका नाम युगों-युगों तक इतिहास, पुराणों के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से सुशोभित, विभूषित हो जाता है। दुनिया उसे युगों-युगों तक याद करती है। ऐसे ही युगदृष्टा थे- भगवान महावीर।

भगवान महावीर जैन परम्परा के 24वें तीर्थंकर एवं वर्तमान शासन नायक हैं। आपको वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। बिहारप्रांत में स्थित कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला के यहां राजकुल कुल में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। कार्तिक अमावस्या को में पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ। भारतीय संविधान की सुलिखित प्रति के 63 वें पृष्ठ पर भगवान महावीर की तप में लीन मुद्रा का एक चित्र अंकित है। भगवान महावीर जन साधारण के बीच रहे और साधारण रूप में रहे।

भगवान महावीर अब हमारे बीच नहीं हैं पर भगवान महावीर की वाणी हमारे पास सुरक्षित है। महावीर की मुक्ति हो गई है पर उनके विचारों की कभी मुक्ति नहीं हो सकती। आज कठिनाई यह हो रही है कि महावीर का भक्त उनकी पूजा करना चाहता है पर उनके विचारों का अनुगमन करना नहीं चाहता। उन विचारों का यदि अनुगमन किया जाता तो देश की स्थिति ऐसी नहीं होती।

अहिंसा जीवन के प्रति सम्मान और जीवन मूल्यों का सार तत्व है : अहिंसा जीवन के प्रति सम्मान और जीवन मूल्यों का सार तत्व है। ये मूल्य दैनिक जीवन के हर पक्ष में प्रयुक्त होते हैं तथा जीवन और उसकी चुनौतियों में सहभागिता को दर्षाते हैं। अहिंसा केवल युद्ध और शांति के प्रति हमारे दृष्टिकोण को ही स्पष्ट नहीं करती वरन् पड़ोसियों के साथ हमारी दैनन्दिन अन्त:क्रियाओं, जीवकोपार्जन के तरीकों, हमारे भोजन, पर्यावरण के साथ हमारे सम्बंधों, पशुओं के साथ हमारे व्यवहारों, शिक्षा, व्यवसाय और राजनीति के बारे में हमारे पर्यावरणीय नैतिकता के विकास का सिद्धांत ही नहीं वरन् एक ऐसे वैश्विक ढांचे के विकास का दार्शनिक आधार भी प्रस्तुत करती है, जिसमें प्राणी मात्र के प्रति सम्मान हो तथा परस्पर सामंजस्य और संतुलन हो। पलायनवादी जीवनशैली से दूर अहिंसा हमें प्राणी मात्र के प्रति वैयक्तिक दायित्व के आनन्दपूर्वक निर्वहन के लिए प्रोत्साहित करती है।

भगवान महावीर का जन्म ऐसे समय हुआ, जहां मानव दानव बनकर क्रूर हिंसा में लिप्त था। हिंसा का ताडंव हो रहा था। अहिंसा के माध्यम से उन्होंने इस पर काबू पाया, आज भी यही स्थिति है। उनकी बतायी हुयी अहिंसा से हिंसा पर काबू पा सकते हैं। अहिंसा सर्वोदय तीर्थ के समान है। अहिंसा ही आत्मा की परमोत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। जिस आत्मा में अहिंसा का निवास है वही सर्वोत्कृष्ट पद को पालता है।

आचार्यों ने कहा है-

धम्मो मंगल मुक्किट्ठो, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति, जस्स धम्मे सयामणो।।

आत्मा का धर्म ही उत्कृष्ट है, वही मंगलकारी है। उसका स्वरूप है अहिंसा, संयम और तप। ये ही आत्मा के उत्कृष्ट धर्म हैं।

हिंसा चार प्रकार की कही गई है-संकल्पी, आरंभी, उद्यमी, विरोधी। इसमें गृहस्थ संकल्पी हिंसा का त्याग करके आरंभी, उद्योगी, विरोधी का त्याग नहीं करता नहीं करता पर व्यापार आदि में व्यर्थ में हिंसा से सदा बचता रहता है।

भगवान महावीर की अहिंसा सार्वभौमिक, सर्वकालिक है : भगवान महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया व इंसान को बाहरी दुनिया के बजाय स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी। मनसा, वाचा और कर्म से अहिंसा को आत्मसात करने का संदेश समाज में स्थायी शांति के लिए महत्वपूर्ण है। अहिंसा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। भगवान महावीर ने अपनी वाणी से और अपने स्वयं के जीवन से अहिंसा को वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ भगवान महावीर का नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। भगवान महावीर ने अहिंसा से सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। उन्होंने तत्कालीन मूल्य-मानकों को चुनौती दी। भगवान महावीर की अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं है। उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया। राज-पाठ, धन-संपदा का त्यागकर पूरी मानवता को सत्य और अहिंसा का पाठ पढाया। आज विश्व हिंसा की ज्वाला से झुलस रहा है। अहिंसा के शीतल जल से ही उसे राहत मिल सकती है। आज पूरी मानवता को महावीर की अहिंसा की जरूरत है।

भगवान महावीर ही उस काल के एक ऐसे महापुरूष थे, जिन्होंने पूरे विश्व को अहिंसा से रूबरू कराया और जियो और जीने दो का पहला संदेश प्रसारित किया। महावीर के इसी संदेश को महात्मा गांधी ने जनांदोलन बनाया था।

अहिंसा का जो संदेश भगवान महावीर ने सदियों पहले दिया था, उसको ही अपनाकर गांधी जी महात्मा और बापू बन गए थे। उन्होंने महावीर के अहिंसात्मक संदेश को ही प्रसारित किया और देश की आजादी की दिशा में कदम बढ़े थे। आज देश का जो दौर है, उसमें बढ़ते क्रूर बातों से हिंसा की क्रांति लिखने की कोशिश की जा रही है।

अहिंसा की सूक्ष्म व्याख्या : भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति से लेकर कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि के प्रति भी मित्रता और अहिंसक विचार के साथ रहने का उपदेश दिया है। उनकी इस शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की सीख भी है। भगवान महावीर के विचार किसी एक वर्ग, जाति या सम्प्रदाय के लिए नहीं, बल्कि प्राणीमात्र के लिए हैं। भगवान महावीर की वाणी को गहराई से समझने का प्रयास करें तो इस युग का प्रत्येक प्राणी सुख एवं शांति से जी सकता है।

अहिंसा की प्रयोगशाला महावीर का जीवन : भगवान महावीर एक सिद्धांत थे। उनका आदर्श हमें जीवन शुद्धि की प्रेरणा देता है और जीवन शुद्धि का आधार है अहिंसा। भगवान महावीर ने अहिंसा को परम धर्म बताया व इंसान को बाहरी दुनिया के बजाय स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी। मनसा, वाचा और कर्म से अहिंसा को आत्मसात करने का संदेश समाज में स्थायी शांति के लिए महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर की अहिंसा के अमोघ शास्त्र को महात्मा गांधी ने अपनाया और भारत को शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की दासता से मुक्त कराया। उन्होंने किसी भी जीव की हत्या न करने, किसी को पीड़ा न पहुंचाने, किसी को दास न बनाने, किसी को यातना न देने और किसी का शोषण न करने का उपदेश दिया। द्वेष और शत्रुता, लड़ाई-झगड़े और सिद्धांतहीन शोषण के संघर्षरत विश्व में जैनधर्म का अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विषेश महत्व रखता है। अहिंसा अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अत्यंत व्यापक अभिधार्थ रखती है। इसमें करूणा, सहानुभूति, दान, विश्वबंधुत्व और क्षमा समाविष्ट हैं। भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन अहिंसा की ही एक प्रयोगशाला रहा। अत: शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए अहिंसा का आचरण जरूरी है। विश्व में शांति के लिए भगवान महावीर की अहिंसक जीवन शैली को आज सभी को स्वीकारना होगा।

भ. महावीर से बड़ा कोई अहिंसाव्रती नहीं : अहिंसा के बल पर देश को आजादी दिलाने वाले महात्मा गांधी ने कहा था-'मैं आप लोगों से यह विश्वास पूर्वक कहूंगा कि महावीर स्वामी का नाम इस समय यदि किसी भी सिद्धांत के लिये पूजा जाता है तो वह है अहिंसा।' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि-'भगवान महावीर से बड़ा अहिंसाव्रती कोई नहीं हुआ। उन्होंने विचारों के क्षेत्र में क्रांतिकारी अहिंसक वृत्ति का प्रवेश कराया। विभिन्न विचारों और विश्वासों के प्रत्याख्यान में जो अहंकार भावना है, उसे उन्होंने पनपने नहीं दिया।' अहिंसा उनका मूलमंत्र था। क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र-शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

भगवान महावीर के सर्वोदयी मार्ग में जीवमात्र के लिए समभाव विद्यमान है। दूसरों का बुरा चाहकर कोई भी अपना भला नहीं कर सकता। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में विषमता से कोई वर्ग सुख-शांति से नहीं रह सकता। इसीलिए महावीर ने अहिंसात्मक अल्पपरिग्रह की व्यवस्था को उपादेय बतलाया। परस्पर समन्वय, सह अस्तित्व, सहिष्णुता एवं साम्यभाव ही अहिंसा और अपरिग्रह के पोशक तत्व हैं।

कोरोना काल में 'जियो और जीने दो' का संदेश हुआ मुखरित : तीर्थंकर महावीर ने 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया। जिसकी आज पूरे विश्व को जरूरत है। हम सबने कोविड महामारी का भयावह रूप देखा है। ऐसे में भगवान महावीर ने जो 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया था वह वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रासंगिक हो गया है। 'जियो और जीने दो' का मतलब है खुद जियें और दूसरे को भी जीने दें। खुद के स्वास्थ्य का ध्यान रखें और दूसरे का भी। कोरोना के दौरान मास्क, दो गज दूरी की बात हर जवान पर रही जो सीधे 'जियो और जीने दो' का संदेश दे रहा है। 'जियो और जीने' का संदेश व्यापक अर्थ लिए हुए है। भगवान महावीर ने सम्पूर्ण जीवन को अहिंसा पूर्वक जीने को कहा। हम ऐसा जीवन जिएं जिससे किसी दूसरे प्राणी को कष्ट न हो और किसी के प्राणों का हरण न हो। जैसे हमें दु:ख पसंद नहीं वैसे ही दूसरों को भी पसंद नहीं है। यदि दुनिया ने यह ध्यान रखा होता तो शायद विश्व को कोरोना जैसी भयावहता से जूझना नहीं पड़ता। विश्व उक्त संदेश को आत्मसात करे तो कोरोना जैसे संकट से उबरने में देर नहीं लगेगी।

अहिंसा से आतंकवाद का खात्मा, जियो और जीने दो : आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। ताजा उदाहरण यूक्रेन और रूस के मध्य चला युद्ध है, दोनों देश लड़े जिसमें अपार जन- धन की हानि हुई। पूरा विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है। भगवान महावीर का प्रमुख सूत्र था -जियो और जीने दो। किसी भी रूप में हिंसा अशांति ही फैलाएगी। शांति के लिए अहिंसक जीवन शैली अत्यंत आवश्यक है। हिंसा की ज्वाला से जूझ रहे विश्व को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के शीतल जल से ही उसे राहत मिल सकती है। जैसे भगवान महावीर के समय हिंसा का बोलबाला था उसी प्रकार आज भी है। उस समय भगवान महावीर ने अहिंसा के उपदेश द्वारा हिंसा पर काबू पाया था, आज उनके अहिंसा के सिद्धांत की सर्वव्यापी जरूरत है।

शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा : महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है। आचार्य अमृतचंद्र जी ने हिंसा-अहिंसा के विवेक को सूत्ररूप में पहले रखा है, फिर उसकी व्याख्या की है। वे कहते हैं कि रागादि भावों की उत्पत्ति हिंसा है और शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा है-

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेप ।।44 ।।

जैनसिद्धांत में 'प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा' अर्थात् प्रमाद के योग से प्राणों का नष्ट करना हिंसा कहा गया है। प्राणों के नष्ट करने के पूर्व प्रमत्तयोग विशेषण दिया गया है। इस प्रमादयोगरूप पद से सिद्ध होता है कि जहां पर प्रमादयोग नहीं है किंतु जीव के प्राणों का घात है वहां पर हिंसा नहीं कहलाती और जहां पर प्राणों का घात नहीं भी है, किंतु, प्रमादयोग है, वहां पर हिंसा कहलाती है।

अहिंसा का सामान्य अर्थ है हत्या न करना या दंड ना देना ऐसा बिल्कुल नहीं होता। इसका व्यापक अर्थ है - किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वार भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में, किसी भी प्राणी कि हत्या न करना, यह अहिंसा है।

महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित : अहिंसा केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु विधेयात्मक भी होती है। तीर्थंकर महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित है। उन्होंने अहिंसक क्रांति के बल पर विश्वबंधुत्व और विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त किया। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है। अहिंसा सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म हिंसा की आज्ञा नहीं देता। अहिंसा की रक्षा के लिए हमारी प्रत्येक क्रिया निर्मल होनी चाहिए।

महावीर की अहिंसा शूरवीरों की : भगवान महावीर की अहिंसा शूरवीरों की अहिंसा है, कायरों की नहीं। पलायनवादी और भीरु व्यक्ति कभी अहिंसक नहीं हो सकता। अहिंसा की आराधना के लिए आवश्यक है -अभय का अभ्यास। उनका चिन्ह शेर भी भगवान महावीर की अहिंसा की शूरवीरता का परिचायक, प्रतीक है। सिंह जंगल का राजा होता है, वन्य प्राणियों पर प्रशासन व नियंत्रण करता है। इसी तरह महावीर की अहिंसा है अपनी इंद्रियों और मन पर नियंत्रण करना। भगवान महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट् निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा सकती।

प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना : महावीर के अनुसार परम अहिंसक वह होता है , जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है , जो सब जीवों को अपने समान समझता है। ऐसा आचरण करने वाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में सिर्फ जीव हत्या ही हिंसा नहीं है , किसी के प्रति बुरा सोचना भी हिंसा है।

अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दु:ख न दें। 'आत्मान: प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत' इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता महावीर : सचमुच महावीर अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता थे। भगवान महावीर अहिंसा की अत्यंत सूक्ष्मता में गए हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है , पर महावीर ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है , वह भी मनुष्य की भांति सुख - दुख का अनुभव करती है। उसे भी पीड़ा होती है। महावीर ने कहा , पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति अकारण सजीव वनस्पति का भी स्पर्श नहीं करता। जल के मितव्ययता पूर्ण उपयोग और वनस्पति की सुरक्षा की बात उन्होंने अपने उपदेश में कही थी।

भगवान महावीर की अहिंसा में प्रकृति संरक्षण का संदेश :

अहिंसा के महानायक महावीर स्वामी ने जल, वृक्ष अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। उन्होंने अहिंसा की विशुद्ध व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उदघोष किया। उनके सिद्धान्तों पर चलकर हमें वृक्ष बचाओ संसार बचाओ उक्ति को अमल में लाना होगा। प्रकृति और पर्यावरण के विरुद्ध चलने से भूकंप, सुनामी, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है। परमाणु खतरों और आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के दर्शन से ही बचाया जा सकता है।

अहिंसा के रक्षासूत्र हैं व्रत : तीर्थंकर महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है। पुरुषार्थसिद्धयुपाय ग्रंथ में अहिंसा को बहुत अधिक व्यापक बनाया गया है। उन्होंने कहा है कि प्रमादयोग से ही व्यक्ति अनेक प्रकार से झूठ बोलता है, कषाययुक्त भावों से ही व्यक्ति दूसरे के धन को हड़पने की चेष्टाएं करता है, रागयुक्त भावनाओं से मैथुन आदि में लिप्त होता है, मूर्च्छाभाव से परिग्रह एकत्र किया जाता है, ये सभी प्रमाद और कषाय भाव हिंसा के ही कारण हैं। अत: झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रहवृत्ति आदि में हिंसा सम्मिलित है। इस प्रकार की हिंसा से बचने के लिए ही अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और

अपरिग्रह व्रतों का पालन किया जाता है। अत: ये व्रत अहिंसा के रक्षासूत्र हैं। इन्हीं रक्षासूत्रों में रात्रि भोजनत्याग व्रत भी है। सात शीलव्रत-तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी अहिंसा की साधना में सहायक हैं। अनर्थदंडव्रत का विधान जैन दर्शन का विशेष अवदान कहा जा सकता है। समाज में अधिकांश कार्य निष्प्रयोजन होते हैं, जिनको करने से आत्मा के विकास, या शुद्ध भावों की वृद्धि में कोई सहयोग नहीं मिलता, अपितु राग-द्वेष की प्रवृत्ति बढ़ती है, जो हिंसा को बढ़ाने वाली है। महावीर की अहिंसा जीवों को न मारने तक सीमित नहीं थी। उसकी सीमा सत्य-शोध के महाद्वार का स्पर्श कर रही थी। इसीलिए महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है।

अहिंसा से मानसिक आतंकवाद का खात्मा : भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण से संघर्ष कर रही है। इसके लिए महावीर ने स्याद्वाद और अनेकान्त का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। मानसिक आतंकवाद आज की बड़ी समस्या है, इसका समाधान भगवान महावीर की अहिंसा में निहित है। अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं है। उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया।

कोई पांच बातों का करें संकल्प : भगवान महावीर के उपदेशों को आज नए संदर्भों में देखने की आवश्यता है। हम जहां-तहां खनिजों की खोज में पृथ्वी को खोद रहे है, जल और वायु को प्रदूषित कर रहे हैं, पर्यावरणविद् स्थावरों की इस हिंसा से चितिंत हैं। विकास के नाम पर विलासता बढ़ रही है और साथ ही अमीर और गरीब के बीच की खाई भी बढ़ रही है। और क्या कहें, हम तो अहंकार पर छोटी-सी चोट पडने पर संसार को सिर पर उठा लेते हैं। पचासों बाते हैं, भगवान महावीर स्वामी का 2550वां निर्वाण महोत्सव सम्पूर्ण देश में वर्शभर विविध आयोजनों के साथ मनाये जाने के निमित्ति आयोजित इस राश्ट्रीय विद्वत् संगोश्ठी के अवसर पर मैं यही कहना चाहता हूं भगवान महावीर के अहिंसा आदि सिद्धांतो से कोई पांच बातें ग्रहण करें। ऐसा करके हम अपना आत्मकल्याण कर सकेंगे।

भगवान महावीर के विचार रोशनी देते हैं : आज देश , विश्व बड़े बुरे दौर से गुजर रहा है, हम बड़े-बड़े बमों, आणविक शक्ति से देश में शांति की स्थापना का सपना पाल बैठे हैं। मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूं विश्व को आतंकवाद जैसी भयंकर बुराई पर काबू पाने के लिए तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकांत-स्याद्वाद के सिद्धांत को अपनाये तो सार्थक हल निकल सकता है। आज समाज आधुनिक तो हुआ है, पर इस सफर में मानवता झुलसी है. नहीं तो क्या वजह है कि परिवार हो या समाज या फिर राष्ट्र, हर जगह राग-द्वेष व हिंसा के भाव ने विभिन्न रूपों में विस्तार लिया है. न वाणी पर संयम और न स्वयं पर नियंत्रण. ऊहापोह भरे इस वक्त में भगवान महावीर के विचार रोशनी देते हैं। भगवान महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है, वह क्रांति का भी दर्शन है। उन्होंने अपने समग्र परिवेश को सक्रिय किया। उन्होंने जन-जन को तीर्थंकर बनने का रहस्य समझाया।

महावीर ने अहिंसा को बड़े व्यापक अर्थ में लिया है। प्राणियों का वध करना ही उनकी दृष्टि में हिंसा नहीं है वरन जिन कारणों से दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचती हो, कष्ट और दुख पहुंचता हो वह सब हिंसा है और ऐसा कोई कर्म न करना जिससे किसी को शारीरिक या मानसिक आघात पहुंचता हो अहिंसा के अंतर्गत आता है। संसार के प्रथम और अंतिम व्यक्ति हैं भगवान महावीर, जिन्होंने अहिंसा को बहुत की गहरे अर्थों में समझा और जिया।

आज जरूरत इस बात की है कि भातृता का अंत हो जाए और विश्व में शांति स्थापित हो, क्योंकि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। मैत्री और करूणा से ही मानव के मन में, घर में, नगर और देश तथा विश्व में शांति और सुख , अमनचैन की धारा बहती है।

आत्मविजेता भगवान महावीर : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृश्णन ने लिखा है कि -'मानव जाति के उन महापुरूषों में से जिन्होंने अपना ध्यान बाह्य प्रकृति से हटाकर मनुष्य की आत्मा के अध्ययन पर केन्द्रित किया, एक हैं महावीर। उन्हें 'जिन' अर्थात् विजेता कहा गया है। उन्होंने राज्य और साम्राज्य नहीं जीते अपितु आत्मा को जीता, सो उन्हें महावीर कहा गया। सांसारिक युद्धों को नहीं अपितु आत्मिक संग्रामों का महावीर। तप, संयम, आत्मशुद्धि और विवेक की अनवरत प्रक्रिया से उन्होंने अपना उत्थान करके दिव्यपुरूष का पद प्राप्त कर लिया। उनका उदाहरण हमें भी आत्मविजय के उस आदर्श का अनुशरण करने की प्रेरणा देता है।'

भगवान महावीर द्वारा बताई गई जीवन-शैली से समस्याओं का समाधान : कोरोना काल में आत्मबल की उपयोगिता को हम सबने जाना है। भगवान महावीर ने तन-मन की शुद्धि तथा आत्मबल बढ़ाने हेतु साधना एवं संयम-तप पर बल दिया। आज के भौतिकवादी युग में जहां खान-पान की अशुद्धता एवं अनियमितता है और जीवन तनावयुक्त है, भगवान महावीर द्वारा बताई गई जीवन-शैली ही समस्याओं का समाधान है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की साधना इसलिए जरूरी है कि हम सुखी रहें और अपने पास- पड़ोस को सुखी रखें। अगर आज पूरे विश्व में महावीर के पंच सिद्धांत अपना लिए जाय तो पूरे विश्व में अन्याय, अनीति, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अराजकता, महामारियां, हिंसा, चोरी आदि विकृतियां समाप्त हो सकती हैं। कोरोना जैसी भयावह स्थिति से बचा जा सकता है।

सदैव अप-टू-डेट हैं महावीर : भगवान महावीर कल, आज और कल हर वक्त प्रासंगिक हैं। उनका संदेश हिमालय की तरह उत्तुंग और गंगा जल की तरह पवित्र है। वे कभी आउट-ऑफ-डेट नहीं हो सकते, वे सदा ही अप-टू-डेट हैं। भगवान महावीर हमारे देश ही नहीं

सम्पूर्ण विश्व की ऐसी विभूति थे, जिनके सिद्धांत और उपदेश सार्वकालीन और सार्वजनीन हैं। संयम की आवश्यकता, अहिंसा और दूसरे के दृष्टिकोण एवं विचार के प्रति सहिष्णुता और समझ का भाव ये उन शिक्षाओं में से कुछ हैं, जो भगवान महावीर के जीवन से हम ले सकते हैं। यदि इन चीजों को हम स्मरण रखें और हृदय में धारण करें तो हम महावीर के प्रति अपने महान ऋण का छोटा-सा अंश चुका रहे होंगे। उनका विराट व्यक्तित्व हमारे देश की एक शाश्वत विभूति है। उनकी करूणा, प्राणीमात्र के लिए असीम थी। अपने में भगवान देखना और हर आत्मा को समान देखना, यही है भगवान महावीर का आत्मा से परमात्मा बनने का धर्म। उन्होंने अपने संदेशों में प्रचारित किया कि सभी जीव बराबर हैं, जो जीव पुरूशार्थ करे, वह भगवान बन सकता है। अत: भगवान महावीर का धर्म साम्प्रदायिकता का नहीं, व्यक्ति का नहीं, यह तो प्राणी मात्र का है। आज की कश्मकश स्थिति में भगवान महावीर की वाणी का मूल्य और भी बढ़ गया है। भगवान महावीर के उपदेशों में एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। एक जीवन पद्धति है। आज इस जीवनपद्धति की कहीं ज्यादा जरूरत है। भगवान महावीर के सिद्धांतों की यदि सर्वाधिक आवश्यकता है तो आज है।

यदि आज भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धांत, अनेकान्तात्मक विचार, सभी पक्षों को अपने में समाहित कर लेने वाली स्याद्वाद वाणी, अहिंसा-युक्त आचरण और अल्प संग्रह से युक्त जीवन वृत्ति हमारे सामाजिक जीवन का आधार व अंग बन जाये तो हमारी बहुत सी समस्यायें सहज ही सुलझ सकती हैं। अतएव हम विश्व शांति के साथ-साथ आत्म शांति की दिशा में भी सहज अग्रसर हो सकते हैं।

उपसंहार : महावीर अहिंसा के दृढ़ उपासक थे, इसलिए किसी भी दिशा में विरोधी को क्षति पहुंचाने की वे कल्पना भी नहीं करते थे, उसको भी नम्रता और मधुरता से ही समझाते थे। महावीर स्वामी का सबसे बड़ा सिद्धांत अहिंसा का है, जिनके समस्त दर्शन, चरित्र, आचार-विचार का आधार एक इसी अहिंसा सिद्धांत पर है। उनका कहना था अहिंसा ही सुख शांति देने वाली है। अहिंसा ही संसार का उद्धार करने वाली है।

महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट्र निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा सकती। सचमुच महावीर अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता थे। महावीर की अहिंसा जीवों को न मारने तक सीमित नहीं थी। उसकी सीमा सत्य-षोध के महाद्वार का स्पर्ष कर रही थी। इसीलिए महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है।

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर ही अपने देश को स्वतंत्रता दिलायी। अहिंसा केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु विधेयात्मक भी होती है। तीर्थंकर महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित है। उन्होंने अहिंसक क्रांति के बल पर विश्वबंधुत्व और विश्वषांति का मार्ग प्रशस्त किया। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्माान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है। अहिंसा सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म हिंसा की आज्ञा नहीं देता। अहिंसा की रक्षा के लिए हमारी प्रत्येक क्रिया निर्मल होनी चाहिए। भगवान महावीर की पहले की अपेक्षा आज अब अधिक जरूरत है। वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकांतवाद, आचरण में अहिंसा का पालन ही महावीर ने श्रेष्ठ धर्म बताया। वैचारिक हिंसा से यदि बचा जाय तो अहिंसा का मार्ग प्रषस्त होता है। भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण आतंक से संघर्ष कर रही है। इसके लिए महावीर ने स्याद्वाद और अनेकांत का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। आतंकवाद के सफाये के लिए आज महावीर स्वामी की अहिंसा की परम आवष्यकता है। भगवान महावीर अपने आचरण व व्यवहार के बल से तीर्थंकर कहलाए।

आज जब मनुष्य द्वारा स्वाद, स्वास्थ्य, स्फूर्ति, सौंदर्य सुख के लिए जीव जंतुओं, पक्षियों पशुओं को इस सीमा तक आहार, शिकार बनाया जा रहा है कि जीव जहां एक ओर लुप्त होने के कगार पर हैं वहीं उनके आहार आदि से मानव समाज नाना रोग, मानसिक विकृतियों से ग्रस्त भी हो रहा है। भगवान महावीर का करूणामय संदेश लोक-परलोक में गूंज रहा है। करोड़ों मानव उनके बताए मार्ग पर चल रहे हैं। भगवान महावीर की जीवन शैली, उनके आचरण की सीख आज भी अनुकरणीय हैं। आवष्यकता अहिंसा परमोधर्म: को मन, वचन, कर्म से स्वीकार करें। इससे जन्म जन्मातर के पापों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा, समाज को क्रोध, भय, अस्तित्व संकट, पीड़ा, पश्चाताप से छुटकारा मिलने लगेगा। वाटिका में पुष्प की भांति भांति, सुख, संतोष, विश्वास की सुगंध से यह संसार सुरभित हो उठेगा। यह अनुकरणीय प्रयोग हमारी जियो और जीने दो की छोटी सी कसौटी पर भी खरा सिद्ध होगा, क्योंकि अंतत: हमें भी तो चाहिए निर्भयता, शांति, भले ही हम कितने ही शक्तिशाली और विकसित हों।

अहिंसा उनका मूलमंत्र था यानी 'अहिंसा परमो धर्म' क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र-शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

यह स्पष्ट है कि भगवान महावीर की जितनी आवश्यकता आज से ढाई हजार साल पहले थी उससे कहीं अधिक वर्तमान युग में है। क्योंकि आज का युग जिस दयनीय स्थिति से गुजर रहा है, इस स्थिति से उभरने हेतु भगवान महावीर के सिद्धांत ही एकमात्र आधार

है। आवश्यकता है हम महावीर को निकटता से समझने का प्रयास करें। मेरी दृष्टि में महावीर जयंती का सर्वाधिक उच्च प्रश्न है हमारे जीवन में अहिंसा और विचार में अनेकांत का समावेश। ये दोनों बिन्दु जीवन की उंचाईयों को छूने की दृष्टि से हमें क्षितिज के उस पार तक ले जा सकते हैं। जहां आध्यात्मिक उंचाई का चरम छुआ जा सकता है।

अहिंसा के मसीहा तीर्थंकर महावीर स्वामी ने उन सूत्रों को ओढ़ा नहीं था, साधना की गहराइयों में उतरकर आत्मचेतना के तल पर पाया था। आज महावीर के पुनर्जन्म की नहीं बल्कि उनके द्वारा जीये गए आदर्श जीवन के अवतरणध्पुनर्जन्म की अपेक्षा है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें तभी महावीर जन्म कल्याणक व निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक होगा। उनकी अहिंसा कल, आज और कल सदैव प्रासंगिक है।

भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाणोत्सव वर्ष में उनके अहिंसा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का दायित्व सम्पूर्ण समाज का है।

'संतप्त-मानस शांत हो जिनके गुणों के गान में,
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।'

-(महावीर पूजन)

समाचार

दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेलगोला के भट्टारक जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकिर्ति महास्वामीजी जी का राजकीय सम्मान के साथ हुआ अंतिम संस्कार

दिगम्बर जैन मठ श्रवणबेल गोला के पीठाधीश जगदगुरु कर्मयोगी परम पू. स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी जी की समाधि २३ मार्च २०२३ को हुई। उनकी समाधि के पश्चात देश की जैन समाज में शोक का वातावरण व्याप्त हो गया।

स्वामी जी के अंतिम समाधि राजकीय सम्मान के साथ संपन्न हुई। हजारों की संख्या में स्वामी जी की अंतिम यात्रा में सम्मलित होकर के सभी ने नम्र आँखों से श्रद्धांजलि अर्पित की। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, मुंबई राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जमगे, सोलापुर कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार बाकलीवाल सहित अन्य पदाधिकारि व समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों, साहित्यकारों ने सम्मिलित होकर स्वामी जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पश्चात क्षेत्र पर पधारे सभी पदाधिकारियों ने स्वामी श्री आगमकीर्ति जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

महावीर के जन्मोत्सव पर ढोल बाजाओ गली-गली

- विजय कुमार जैन, हस्तीनापुर

वर्तमान युग में भगवान महावीर के अस्तित्व को जैन धर्म ही नहीं अपितु सारा विश्व स्वीकार करता है। भगवान महावीर की अहिंसा जन-जन के लिए है। क्योंकि जैन धर्म सूक्ष्म से सूक्ष्म हिंसा का विरोध करता है। अहिंसा परमोधर्म सर्व व्यापी संदेश है। जो कि प्राणी मात्र के लिए एक रक्षाकवच का कार्य करता है। जिसने अहिंसा का पालन किया वह जैन है। इसी लिए कहा है कि जैन जाति ना होकर के एक धर्म है। जिसने भी अहिंसा का पालन किया वह जैन है।

भगवान महावीर के संदेशों में मुख्यरूप से अहिंसा परमो धर्मः एवं जिओ और जीने दो मुख्य है। जो व्यवहार हम अपने लिए नहीं चाहते हमें दूसरों के लिए भी नहीं करना चाहिए। किसी के मन को दुखी करना भी भगवान महावीर ने हिंसा कहा है। सारे विश्व में यदि शांति की स्थापना की जा सकती है तो वह अहिंसा से ही की जा सकती है। सभी धर्मों में इस बात को मुख्य रूप से स्वीकार किया है। अहिंसा के अवतार भगवान महावीर का आज 2618 वां जन्मकल्याणक सारा विश्व में निरामिश दिवस के रूप में मना रहा है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य यही है कि हम अपने जीवन में व्यसनों का त्याग करके भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चल कर अपने जीवन को समुन्नत बनायें एवं एक सभ्य समाज का निर्माण करें जिससे भारत देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके।

हम देखते है कि समाज में यदि परिवार के अंदर पुरूष किसी भी प्रकार का व्यसन करता है तो वह परिवार धीरे-धीरे विनाश की ओर चला जाता है। भगवान महावीर के इस जन्म दिवस पर हम सभी संकल्प ले कि हम अपने जीवन में अहिंसामयी धर्म को अपना कर अपना एवं अपने परिवार का कल्याण करेंगे।

भगवान महावीर का जन्म आज से 2622 वर्ष पूर्व बिहार प्रांत के कुण्डलपुर ग्राम के महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के गर्भ से नंद्यावर्त महल में हुआ था। उस समय धनकुबेर ने इंद्रों के साथ मिलकर प्रतिदिन 14 करोंड़ रत्नों की वृष्टि की थी, ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है। क्षण भर के लिए नरकों में भी शांति का वातावरण छा गया। नेमीचंद सिद्धांत चक्रवर्ती ने प्रतिष्ठा तिलक ग्रथ में भगवान के जन्म कल्याणक का उल्लेख करते हुए लिख-

कल्पेषु घंटा भवनेषु शंखो, ज्योतिर्विमानेषु च सिंहनादः।
दध्वान भेरी वनजालयेषु, यज्जन्मनि ख्यात जिनः स एषः॥ ३

ऋतुओं के फल-फूल वृक्षों पर एक साथ आ गये एवं तीनों लोकों में जितने वाद्ययंत्र है वे सभी बिना बजाये एक साथ बजने लगे ऐसा भगवान के जन्म का अतिशय है। आज वर्तमान युग में वह कुण्डलपुर नगरी वैभव हीन हो गई थी लेकिन जैन साध्वी भारतगौरव गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से पुनः कुण्डलपुर तीर्थ को भव्य रूप में विकसित किया गया। भगवान महावीर ने जिस महल में जन्म लिया था वह महल सोने का हुआ करता था किन्तु आज वर्तमान में उसकी प्रतिकृति कुण्डलपुर तीर्थ पर निर्मित की गई है। जिसमें भगवान महावीर के जीवन से संबंधित सभी घटनाओं को दर्शाया गया है। नालंदा आज वर्तमान में विश्व प्रसिद्ध स्थान है। जहां पर अनेक देशों के लोग आते है एवं कुण्डलपुर तीर्थ पर नंद्यावर्त महल में भगवान महावीर का दर्शन करके सुख-शांति और समृद्धि की कामना करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से यहां पर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति एक अध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति करता है। भगवान महावीर की श्वेतवर्णी अवगाहना प्रमाण (सात हाथ) की प्रतिमा का दर्शन करके पलक झपकाना जैसे भूल जाता हो मनोहारी प्रतिमा वीतरागता एवं अहिंसा का संदेश इस नालंदा कुण्डलपुर की धरती से देता है।

भगवान महावीर के पांचों कल्याणक से पवित्र बिहार की धरती आत्यात्मिक ऊर्जा को अपने आंचल में समेटे हुए है। बुद्ध और महावीर की यह धरती आने वाले दर्शकों का मन मोह लेती है। भगवान महावीर का सात मंजिल का नंद्यावर्त महल मनोहारी कुण्डलपुर की धरती पर बना हुआ है। शास्त्रों में भगवान महावीर के जन्म का उल्लेख करते हुए लिखा है कि सारे विश्व में कुरीतियों को समाप्त करने के लिए भगवान महावीर का जन्म हुआ था उस समय यज्ञों में पशु एवं नर बली का प्रचलन बढ़ता जा रहा था। तब भगवान महावीर का अवतार इस धरती पर हुआ।

इस संदर्भ में शास्त्रों में लिखा है

''जन्म चैत सित तेरस के दिन कुण्डलपुर, कन वरना
सुरगिरि सुरगुरू पूज रचायों, में पूजों भव-हरना नाथ मोह राखो शरना''

भगवान महावीर का बाल्यकाल कुण्डलपुर की धरती पर बीता एक बार नंद्यातर्व महल में बालक वर्धमान पालने में झूल रहे थे तभी संजय-विजय नाम के दो महामुनि वहां पधारे जिन बालक को देखने मात्र से ही उनके मन में हो रही शंका का निवारण हो गया अतः अत्यंत प्रसन्नता से उन्होंने भगवान महावीर का नाम सन्मति रखा बालक वर्धमान इंद्र द्वारा अंगूठे के स्थापित अमृत को चूंसते हुए चंद्रमा की कलाओं के समान धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त होने लगे। घुटने पर चल-चलकर अपनी तोतली बोली एवं बाल चेष्टाओं से परिवार का आनंदित करने लगे बालक वर्धमान एक बार अपने मित्रों के साथ नंद्यावर्त महल के बगीचे में खेल रहे थे तभी उनकी बहादुरी की परीक्षा लेने हेतु स्वर्ग से संगम नामक देव एक विशालकाय सर्प का रूप बनाकर वहां आया सभी बच्चे सर्प को देखकर इधर-उधर भागने लगे किन्तु बालक वर्धमान किंचित भी विचलित एवं मयभीत नहीं हुए उनकी महान वीरता का परिचय देखकर संगमदेव ने अपना असली रूप प्रकट कर बालक वर्धमान के बल एवं धैर्य की प्रशंसा करते हुए उनको महावीर नाम दिया धीरे-धीरे भगवान महावीर बड़े होने लगे उनके लिए सदैव स्वर्ग से भोजन, वस्त्र एवं आभूषण आते थे। उन्होंने कभी भी अपने घर का भोजन नहीं किया क्योंकि सभी तीर्थंकरों के लिए जैन शास्त्रों में यही नियम लिखा है कि वे स्वर्ग का दिव्य भोजन ही करते है।

धीरे-धीरे महावीर युवा अवस्था को प्राप्त होने लगे माता-पिता ने एक स्वप्न सजोंया कि युवराज महावीर की सुन्दर सी दुल्हन लेकर के राज्य महलों में आयेगी लेकिन शायद होनी को कुछ और ही मंजूर था युवराज महावीर ने मुक्तिपथ को बरने की अर्थात् जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा

माता-पिता के सामने रखते है माता-पिता तो भगवान महावीर की बात सुनते ही स्तब्ध रह जाते है एवं कहने लगते है कि बेटा महलों में किस चीज की कमी है जो तुम घर छोड़कर के वनों में जाकर तपस्वी जीवन व्यतीत करना चहते हो लेकिन महावीर ने माता-पिता को समझाकर शांत किया एवं देवों द्वारा लाई हुई पालकी में बैठकर वन की ओर उन्मुख (चले गये) हो गये।

30 वर्ष ही भरपूर यौवन अवस्था में महावीर ने केशों का लोंच (बालों को हाथों से उखाड़ना) करके सम्पूर्ण राज्य वैभव वस्त्राभूषण त्यागकर के जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की एवं 12 वर्षों तक कठोर तप करके केवलज्ञान की प्राप्ति की। बिहार प्रांत के जमुई ग्राम में ऋजुकूला नदी के तट से भगवान को ज्ञान की प्राप्ती हुई। तत्पश्चात् स्वर्गों से इंद्रों ने आकर के भगवान का केवलज्ञान कलयाणक महोत्सव मनाया इसी श्रृखंला में राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर श्रावण कृष्णा एकम् के शुभदिन भगवान की प्रथम देशना (प्रवचन) हुई, जिसे सम्पूर्ण प्राणी मात्र ने अपनी अपनी भाषा में समझा एवं ग्रहण किया। भगवान के मुख्यरूप से 5 नामों का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है वीर, वर्धमान, सन्मति, महावीर और अतिवीर ये पांच नाम प्रसिद्ध हैं।

भगवान महावीर दीक्षा के पश्चात् एक बार विहार करते हुए कौशाम्बी नगर की ओर पधारे जहां पर महासती चंदना जो कि कारागृह में बंद थी भगवान महावीर को आहार देने की तीव्र अभिलाषा मन में जागृत हुई इतना मन में चिंतन करते ही सती चंदना की बेड़ियां टूट गई वस्त्राभूषण सुन्दर हो गये एवं भक्ति पूर्वक भगवान का पड़गाहन कर आहार दिया। इस उपलक्ष्य में स्वर्गों से पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई। भगवान महावीर की देशना सारे देश में घूम घूम करके अहिंसा धर्म का उपदेश दिया। प्राणी मात्र को जियो और जीने दो की बात बताई भगवान का मुख्य संदेश था की प्राणी मात्र पर दया का भाव रखो जीवों की हिंसा में धर्म नही है। धर्म हमेशा सुख और शांति का संदेश देता है। आज वर्तमान में भगवान महावीर के संदेशों की अत्याधिक आवश्यकता है।

जैन श्रद्धालु प्रातःकाल भगवान की जय-जय कारों के साथ प्रभातफेरी नगर में घुमाते है एवं भगवान महावीर स्वामी के जीवन से संबंधित संगोष्ठी का आयोजन करते हुए समस्त महिला संगठन भवगान महावीर के जीवन से संबंधित नृत्य नाटिका एवं जीवन चरित्र का नृत्य नाटिका के माध्यम से मंचन करते हैं एवं नगर में भगवान महावीर महावीर की प्रतिमा को रथ पर विराजमान करके भव्य शोभा यात्रा का आयोजन करते हैं। शोभा यात्रा में प्रत्येक महिला एवं पुरूष सफेद व केशरिया वस्त्र पहनकर पंतिबद्ध होकर महिलाएं मंगल कलश लेकर चलती है। इस अवसर पर समस्त नगर में मिष्ठान का वितरण भी किया जाता है। महावीर जयंती का मुख्य उद्देश्य जीवन में सदाचार, शाकाहार को अपनाना है इसी के साथ भगवान महावीर का जन्म कल्याणक आप सभी के लिए मंगलमय हो।

श्रद्धांजलि

अश्रुपूर्ण, भावभीनी श्रद्धांजलि

परम पूजनीय , श्रवणबेलगोला के भट्टारक स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी के देवलोक होने से सकल जैन समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है । श्रवणबेलगोला जैन मठ के निकटतम गाँववासियों को आपके द्वारा अन्नदान - आर्थिक सहायता , चिकित्सा - सुविधा , शिक्षा - सुविधा प्राप्त थी । आपके अनुभव से जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं था । श्रवणबेलगोला और दिगम्बरत्व , अहिंसा , प्रेम , शान्ति ,त्याग , मैत्री की भावना को आपने विश्वपटल पर अंकित किया । वे सतत श्रवणबेलगोला में विराजे भगवान बाहुबली के पास रहते हुए अपनी साधना करते रहे । आपके सान्निध्य में प्रति 12 वर्ष में होने वाले भगवान बाहुबली के चार महामस्तकाभिषेक यशस्वीरूप से सम्पन्न हुए । हम लोगों को भी श्रवणबेलगोला महामस्तिकाभिशेक के अवसर पर उनके सानिध्य का अहोभाग्य हुआ और उनके मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर मिला। उनके ओजस्वी व्यक्तित्व से सदैव अभिभूत, सदैव उनकी स्मृतियों से परम आनंदित, उनके चरणों में हम सभी का सादर , भावपूर्ण, शत शत नमन।

आचार्य ज्ञानसागर इंटरफैथ फाउंडेशन, समस्त पदाधिकारियों और सदस्यों की ओर से हम अश्रुपूर्ण, भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

॥ॐ शांति,ॐ शांति,ॐ शांति॥

स्वराज जैन (टाइम्स) सीए आदीश कु जैन
और समस्त सदस्य एवं पदाधिकारीगण

डॉ. भारिल्ल को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

जैन धर्म एवं दर्शन ख्याति प्राप्त विद्वान टोडरमल स्मारक भवन जयपुर से सम्बद्ध डॉ. हुकुमचंद जैन भारिल्ल के देहावसान पर विद्वानों एवं समाजसेवियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

पार्श्वज्योति मंच के विद्वान डॉ. नरेन्द्र जैन भारती ने श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें जैन दर्शन का तल स्पर्शी विद्वान, श्रेष्ठ प्रवचनकार एवं लेखक बताते हुए उन्हें उन्नत व्यक्तित्व का समन्वयवादी विद्वान बताया । श्रवणबेलगोला में अनेक कार्यक्रमों में उनके साथ मेरी सहभागिता रही, तथा उन्होंने मुझे अनेक स्वरचित ग्रंथ दिए थे। चांदमल जैन, गजेंद्र बाकलीवाल, सम्मी जैन, जितेंद्र जैन, रितेश जटाले, बसंत पंचोलिया, नरेंद्र पंचोलिया, ने उनके निधन को जैन समाज की अपूरणीय क्षति बताया है।

अ. भा. दि. जैन विद्वत परिषद के संरक्षक डॉ. रमेशचंद जैन नई दिल्ली, अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार जैन वाराणसी, उपाध्यक्ष डॉ.सुरेंद्र जैन भारती बुरहानपुर, महामंत्री डॉ विजय जैन लखनऊ ने भी उनके निधन पर दुख व्यक्त करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

युग पुरुष : भगवान महावीर

– सुबोध मलैया, सागर

भगवान् महावीर का परि निर्वाण हुए 2550 वर्ष बीत गये। वे जैन धर्म जिसका इतिहास दस हजार वर्ष पुराना है के चौबीसवें और अन्तिम तीर्थंकर है, संस्थापक नहीं । इसका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में भी उपलब्ध है और उनका जन्म, मृत्यु और आलौकिक प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व विवादास्पद नहीं, चिरन्तर काल से भारत, विश्व-मानव समाज के लिए मूल्यवान, विचार और आध्यात्मिक दर्शन का स्त्रोत रहा है । भारतीय संस्कृति ने जीवन को देखने-परखने और सँवारने के लिए नई दृष्टि दी है, विश्व के समस्त दर्शनों में जैन दर्शन अपनी प्राचीनता, विशदता, व्यापकता और वैज्ञानिकता की प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरता है।

भगवान् महावीर ने कोई नया धर्म नहीं चलाया उन्होंने जो कुछ कहा, वह सदा से है, सनातन है उन्होंने धर्म की स्थापना नहीं, उसका उद्घाटन किया है। उन्होंने धर्म को नहीं, धर्म में खोई आस्था को स्थापित किया है।

चिरन्तर काल से भारत, विश्व-मानव समाज के लिए मूल्यवान विचार और आध्यात्मिक दर्शन का स्त्रोत रहा है । भारतीय संस्कृति ने जीवन को देखने-परखने और संवारने के लिए सर्वथा नई दृष्टि दी है । जैन दर्शन अपनी प्राचीनता, विशदता, व्यापकता और वैज्ञानिकता की प्रत्येक कसौटी पर खरा उतारता है जैन सिद्धांत अपनी चारित्रिक शुचिता कठिन तपश्चर्या, अहिंसा, अपरिग्रह, मर्यादा, वैज्ञानिक अनुसंधान, गणित, तर्क, न्याय और उपयोगिता के कठोर मानदण्डों पर खरा उतरते गए वैसे-वैसे विश्व समुदाय का ध्यान जैन सिद्धांतों की ओर आकृष्ट होता जा रहा है।

भगवान् महावीर के समय जैन धर्म मूल संघ के नाम से जाना जाता था फिर विदेशी यात्रियों ने इसे निर्ग्रंथ कहा है जो आज जैन या आर्हत धर्म कहा जाता है, महावीर स्वामी ने द्वादशांग परमागम है इसकी टक्कर का दूसरा जैन आगम में ग्रंथ नहीं हैं । महावीर स्वामी ने द्वादशांग वाणी गौतम गणधर के माध्यम से श्रुत केवली, आचार्यों, साधु संतों को मौखिक प्रदान की थी उसमें एक पीढ़ी से दूसरी और तीसरी पीढ़ी को देने में अन्तर व्याप्त हो गया लिखने की परम्परा बाद में फैली। दिगम्बर परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में आचार्य भद्रबाहु का महान योगदान है । दक्षिण में दिगम्बर परम्परा का विकास, प्रचार, प्रसार एवं राज्याश्रय भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त (विशाखाचार्य) की देन है। आचार्य कुन्द कुन्द भी दक्षिण के थे और दिगम्बर परम्परा का संवर्धन भद्रबाहु के बाद आचार्य कुंद कुंद की देन है।

जैन धर्म के संस्थापक भगवान् ऋषभदेव या भगवान् महावीर नहीं थे अपितु वे उनके प्रचारक थे। जैन धर्म में पंच परमेष्ठियों की उपासना होती है किसी अन्य देवी देवताओं की आराधना नहीं होती है । जैन मत के प्रवर्तक चौबीस तीर्थंकर थे अत्यन्त प्राचीन काल से ही इन तीर्थंकरों की लम्बी परम्परा चली आ रही है। ऋषभ देव इस परम्परा के प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं वर्द्धमान या महावीर इसके चौबीसवें या अन्तिम तीर्थंकर थे। भगवान् महावीर का जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दि पहले वर्द्धमान से पूर्व 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म ईसा से लगभग 900 वर्ष पूर्व माना जाता है इनसे पूर्व 22 तीर्थंकर हुए हैं।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की पवित्र भावना ताकि प्राणीमात्र में मैत्री की भावना जागृत हो जावे। सभी के हृदय में न सिर्फ स्वयं जीने की बल्कि दूसरों के जीवन की सुखद और मैत्री पूर्ण चाहत हो तभी तो हम गर्व से भगवान् महावीर का संदेश जन-जन तक पहुंचा पायेगे कि "जियो और जीनो दो" हर उस व्यक्ति की जितनी आवश्यकता हमें है उतनी ही दूसरों को भी तब फिर हम इतने स्वार्थी क्यों बन जाते हैं कि सभी का हिस्सा, सभी का हक स्वयं ही हड़पना चाहते हैं। यदि हम सचमुच सभी को अपने समान मानें, सभी के प्रति सच्चा मैत्री भाव रखें तब तो समस्या स्वत: ही हल हो जावेगी । अभाव वस्तु का नहीं वस्तु के प्रति सम्यक भाव का है जिसे परित्याग कर, किसी भी वस्तु को मात्र अपनी ही नहीं सभी की जरुरत माने तथा सभी की जरुरत भी पूरी करें लेकिन हम सहज नहीं कर सकते यह तो हम तभी संभव करके दिखा सकते हैं जब हमारे दिल में सभी के कल्याण को मंगलमयी मित्रता की भावना हो, मैत्री भाव हो सभी पर।

भगवान् महावीर जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर एक कालजयी व्यक्तित्व हैं जिनका नाम सिद्धांत, साधना व तत्व को किसी भी काल के थपेड़े में निष्प्रभावी नहीं होते है वह सदा काल शाश्वत एक जैसे रहते हैं। महापुरुष विश्व की महान विभूति होते हैं जो साधारण और आलौकिक गुणों को अपने जीवन में धारण कर लेते हैं मानव मात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देते हैं उनके समर्पण की भावना उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में उपस्थित कर देती है। जैन धर्म स्वयं इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि जैन जाति एवं वैश्य वर्ण के लोग तीर्थंकर जैसी विभूति को न पा सके उसे पाने वाले तो जैन धर्म के किसी न किसी रूप में संपर्क में आये इक्ष्वाकु, नागवंशी, नाथवंशी, यदुवंशी, क्षत्रिय हुए हैं। महावीर का मार्ग समर्पण, भक्ति का नहीं, ज्ञान, श्रम का है, यह जैनों की श्रमण परम्परा का परिष्कृत स्वरूप है। क्षत्रियों द्वारा प्रतिपादित श्रमण परम्परा, ब्राह्मण परम्परा के विरोध में महावीर से पहले से प्रचलित थी, भगवान् महावीर ने उसकी विसंगतियों और शिथिलताओं को परिष्कृत कर उसे पूर्ण वैज्ञानिक आधार दिया। भक्ति, चमत्कार, कृपा आशीर्वाद आदि को नकारा, उनका मार्ग शाश्वत है और उसकी सार्थकता आज भी है और हमेशा रहेगी, महावीर, विचारक, दार्शनिक, त्यागी, तात्विक या उपदेशक न होकर एक क्रान्तिकारी साधक हैं वे सत्य, जीवन की जटिलताओं का विवेचन नहीं करते, धारणायें, विचार या सिद्धांत प्रतिपादित नहीं करते वरन् आत्मज्ञ, मुक्ति खोजी स्वानुभाव से प्राप्त विशुद्ध आत्म दर्शन के साधक हैं। भगवान् महावीर ने धर्म, जाति, लिंग-भेद आदि को नकारा, उनके अनन्यतम शिष्य (गणधर) इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण थे, दीक्षित होने पर पहला आहार भगवान् महावीर ने एक ब्राह्मण के घर लिया, चन्दनबाला के हाथों से आहार ग्रहण किया। हर जाति, धर्म और सम्प्रदाय के अनुयायी उनके शिष्य बने, स्त्रियों को उन्होंने पुरुषों के बराबर स्थान दिया उन्हें संघ में शामिल कर दीक्षित किया। धर्म को वैयक्तिक माना, सामाजिक और साम्प्रदायिक नहीं उनके मतभेद वैचारिक और सैद्धांतिक थे, साम्प्रदायिक या जातीय स्तर पर नहीं।

तीर्थंकर भगवान् महावीर का सम्पूर्ण भारत में लगभग तीस वर्ष तक धर्मोपदेश व विहार होता रहा, उनके विहार की अधिकता के कारण भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग ही 'बिहार' के नाम से जाना जाने लगा। बिहार प्रान्त के कई बड़े बड़े नगर 'वर्द्धमान', 'वीर भूमि' उनके नाम पर बसे, उनके चिन्ह के नाम पर 'सिंहभूमि' नगर बसा है।

भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित पाँच महान् आदर्श यदि हम अपने जीवन में उतार उन्हें व्यवहारिक रूप में अपना लें तो निश्चित ही आत्म शान्ति के साथ-साथ विश्व शांति की दशा में अग्रसर होगें। भगवान् महावीर के उपदेशों को आज उन्हें अपने जीवन में उतारने का सबसे ठीक समय आ पहुंचा है क्योंकि जैन धर्म का तत्व ज्ञान, अनेकान्त पर आधारित और जैन धर्म का आधार अहिंसा पर प्रतिष्ठापित है। जैन धर्म कोई पारम्पारिक विचारों, ऐहिक व पारलौकिक मान्यताओं पर अन्ध श्रद्धा रखकर चलने वाला सम्प्रदाय नहीं वह मूलत: विशुद्ध वैज्ञानिक धर्म है। भगवान् महावीर के मार्ग पर चलने की उन्हीं की तरह मुक्त होने की कोशिश निरन्तर की जानी चाहिए।

समाचार

तपस्या शिरोमणि अंतर्मना प्रसन्न सागर महाराज ने संत शिरोमणि आचार्य विद्या सागर महाराज की चरण वंदना

अंतर्मना आचार्य प्रसन्नसागरजी महाराज ससंघ ने संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चरण वंदन करने अमरकंटक पहुँचे। अंतर्मना गुरुभक्त चन्द्र प्रकाश बैद नरेंद्र अजमेरा पियूष कासलीवाल ने बताया की प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज के दर्शन वंदन करने आज प्रातकाल अंतर्मना गुरुदेव ससंघ शाश्वत तीर्थराज की पावन धरा से सिंह निष्क्रिड़ित व्रत की अद्भुत साधना सम्पन्न करने के बाद करीब 1000 किलोमीटर का विहार करके अमरकंटक पहुचे, गुरुदेव के साथ सेंकड़ो गुरु भक्तों को भी आचार्य श्री के दर्शन का सौभाग्य मिला अंतर्मना गुरुदेव आचार्य श्री के सानिध्य में करीब 5 घंटे रहें।

गुरुदेव के 35 वें दीक्षा दिवस को गुरु भक्तों ने हर्षउल्लास से मनाया। अंतर्मना गुरुदेव के 35 वें दीक्षा दिवस पर गुरु पूजन का आयोजन चिकती पानी ग्राम में हुआ। अंतर्मना गुरुदेव के 35 वें दीक्षा दिवस पर बैद परिवार द्वारा स्कूली छात्रों को उपहार भेंट किये गए सभी छात्रों ने गुरुदेव के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम में सम्पूर्ण देश के गुरु भक्त उपस्थित हुए जिसमे डॉ संजय, विवेक गंगवाल, ऋषभ जैन अहमदाबाद, संघपति मुकेश चेन्नई, दिलीप हुमड़, अजय जैन कोटा, विपुल जैन, मनोज धूलियान, सुरेन्द्र धुलियान के साथ किशनगढ़ के चन्द्र प्रकाश बैद, आरती बैद, अरविन्द बैद, अक्षत बैद, सृष्टी बैद सहित अनेक गुरुभक्त सम्मिलित थे।

नैनागिरि जैन तीर्थ : पुरातन से अद्यतन – एक सार्थक दस्तावेज

– डॉ. प्रेम भारती, भोपाल

साहित्यकार और शिक्षाविद डॉ. प्रेम भारती धरती से जुड़े ऐसे रचनाकार है, जिनकी संख्या बहुत नहीं होती। उनका लेखन, साहित्य, पत्रकारिता, वेदांत, ज्योतिष, योग, बालसाहित्य जैसे विविध विषयों की रोचक प्रस्तुति पर आधारित है। आपकी रचनाऐं विद्यालयीन पाठ्यक्रम से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित है। साथ ही, इन्हीं स्तर के पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों के सृजन, संपादन में आपकी महती भूमिका रही है। आपकी रचनाओं को लेकर चौदह शोध विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो चुके है। माध्यमिक शिक्षा तथा विश्वविद्यालय की अनेक समितियों में आपकी प्रशासनिक भूमिका रही है। राष्ट्रीय एवं प्रांतीय अनेक पुरस्कारों से विभूषित डॉ. भारती की वेशभूषा और ऋषिकल्प व्यक्तित्व के साथ सहज ही उनमें भारतीयता के दर्शन हो जाते है।

– संपादक

आज व्यवहार और धर्म के मध्य इतनी बडी दरार पड गई है कि धर्म के प्रति आस्था दिखाने वाला व्यक्ति भी व्यवहार में धार्मिक नहीं होता। एक ओर वह धर्म करते हुए दिखाई देता है तो दूसरी ओर अधर्मयुक्त व्यवहार करता हुआ जीवन बिता देता है। प्राय: यह स्थिति सभी धर्मो के अनुगामियों में परिलक्षित हो रही है। ऐसे में श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) तथा उनकी पत्नि न्यायमूर्ति विमला जैन ने नैनागिरि जैन तीर्थ में विपरीत परिस्थितियों को झेलते हुए तन, मन, धन से उस तीर्थ के चतुर्मुखी विकास में जो कार्य किए है, वे निश्चय ही सराहनीय है। धर्म को व्यवहार में लाने का यह अनूठा प्रयास है।

अपने माता-पिता को पुस्तक समर्पित करते हुए श्री जैन का कहना है कि उनके मन में इस तीर्थ के प्रति रुचि का जागरण माता-पिता के दिए गए बचपन के संस्कार है। जीवन के अंतिम काल में उन्होंने ऐसा करने हेतु प्रण दिलवाया था जिसका पालन वे अब भी कर रहे है।

मैंने पूरी पुस्तक ध्यान पूर्वक पढ़ी। सचमुच इसे पुस्तक नहीं एक वृहदग्रन्थ कहा जा सकता है, जिसमें नैनागिरि के स्थापत्य, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, ऐतिहासिकता का धार्मिक और पौराणिक दृष्टि से वर्णन किया गया है। यह ग्रन्थ 7 खण्डों में विभाजित है, जिसकी विषय सामग्री इस प्रकार है–

प्रथम खण्ड – नैनागिरि तीर्थ वंदना
द्वितीय खण्ड – ऐतिहासिक नैनागिरि
तृतीय खण्ड - मंदिर मूर्ति प्रशस्ति
चतुर्थ खण्ड – नैनागिरि का जैन पुरातत्व
पंचम खण्ड – हमारे प्रकल्प
षष्ठम खण्ड – साधु संतो के प्रवास एवं प्रेरक प्रसंग
सप्तम खण्ड (परिशिष्ट) – श्री सुरेश जैन का अवदान

प्रधान संपादक डॉ. महेन्द्र जैन 'मनुज' ने 'नैनागिरि पर केन्द्रित श्री जैन का अवदान' शीर्षक से इस परिशिष्ट को श्री सुरेश जैन अभिनन्दन ग्रन्थ की संज्ञा दी है। उन्होंने परिशिष्ट की सामग्री को ध्यान में रखकर ऐसा कहा है।

न्यायमूर्ति विमला जी का एक आलेख पंचमखण्ड में तीर्थंकर वन और वृक्षारोपण भी पढ़ने योग्य है। आज के संदर्भ में उनके विचार

समसामयिक है। लेख में उन्होंने जैन तीर्थंकरों का प्राकृतिक संपदा एवं अन्य प्राणियों के संरक्षण में तीर्थंकरों के योगदान का महत्व स्पष्ट करते हुए एक महत्वपूर्ण बात कही है कि चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाओं पर अंकित चिन्ह प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के अर्थ एवं संदेश के संवाहक है। वृक्षों को इनके स्थूल रूप तक सीमित न मानकर उनके समग्र रूप में समझने के लिए पाठक को इस लेख में बहु उपयोगी जानकारी पढने को मिलेगी। इस आलेख को 33 राष्ट्रीय अखबारों ने प्रकाशित कर इसकी महत्ता को उजागर किया है।

आज के संदर्भ में देखे तो धर्म का लाभ है – चेतना का जागरण। धर्म करने पर भी आनन्द का भाव नहीं जगा, तो समझना चाहिए धर्म किया ही नहीं, धर्म के नाम पर कुछ और किया है। जब तक धार्मिक मान्यता सेवा भावना में नहीं बदलती तब तक दृष्टि भी नहीं बदलती।

मैं विमला जी को धन्यवाद देना चाहूँगा कि उन्होंने धर्म के मूल सूत्र को जाना। धर्म स्थान में जाकर लोग कुछ पाना चाहते है किन्तु त्याग करना कोई नहीं चाहता। यही धर्म की समस्या का मूल है। त्याग किया नहीं जाता, स्वयं में होता है। जो त्याग बाहरी दुनिया को ध्यान में रखकर किया जाता है, वह अपने आपको नहीं पहचान पाता। ऐसे व्यक्ति न धर्म को जानता है न साधना को। आज हमें समझना यह है कि धर्म का उपयोग इस प्रकार करें कि उससे हमारा सेवा का मार्ग प्रशस्त हो।

इस ग्रन्थ के निर्माण में यही दृष्टि प्रमुख रही है। जैन धर्म में 23 वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं 24 वे तीर्थंकर महावीर का नाम प्रमुख है। जैन दर्शन इन्हीं की विचारधारा है। नैनागिरि तीर्थ भगवान पार्श्वनाथ की तपोभूमि रहा है। तबसे लेकर अनेक संतो ने इस स्थल पर तप करके साधना की है।

ग्रन्थ में नैनागिरि की पुरातन कथाओं का वर्णन आधुनिक संदर्भ में पढ़ने को मिला। नैनागिरि के विविध आयामों की अमर कहानी सरल शब्दों में दी गई है, यह भी पठनीय है।

अंत के परिशिष्ट में श्री सुरेश जैन द्वारा नैनागिरि तीर्थ के विकास में किए गए अवदान को पढ़कर ऐसा लगा कि उनके पूर्वजों की 238 वर्षो से

यहाँ के मंदिर निर्माण तथा मूर्ति स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सूत्र वाक्य में कहें तो "सुरेश जैन" एक नाम नहीं, बल्कि व्यवस्थित, सुदीर्घ, स्वस्थ परंपरा के संवाहक है। इस परंपरा से प्रेरणा लेकर समाज के अन्य लोग भी एक स्वस्थ जीवन जीते हुए सार्थक सामाजिक कार्य कर सकते है।

श्री जैन तथा श्रीमती विमला जैन द्वारा साहित्यिक अवदान का उल्लेख किए बिना अपनी बात को अधूरी समझूँगा। यह विषय इस ग्रन्थ में पृष्ठ 557 से 561 तक सूचीबद्ध किया गया है। पाठक उसे अवश्य पढ़ें।

पाठकों से अनुरोध है कि वे यहाँ पधारे संतों के अनुभवो को भी पढें। इन संतो ने सूर्य की किरणों की भांति इस क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रकाश विकीर्ण करने का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिससे जन- जन को शाश्वत मूल्यों की शक्तिशाली ऊर्जा प्राप्त करने का अनुभव हुआ है। आचार्य विद्यासागर जी से संबंधित नैनागिरि के तेरह प्रसंगों को पढने में रूचि बढी, तो अच्छा अनुभव हुआ।

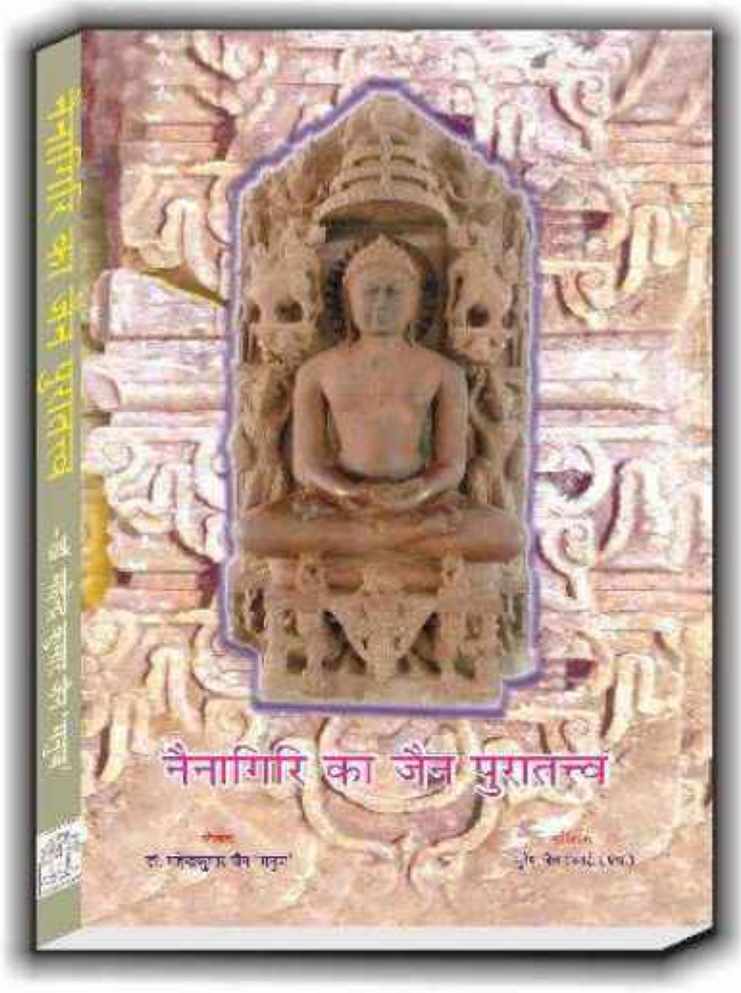

यहाँ 35 प्रकल्प भी चल रहे हैं, जो अपने आप में महत्वपूर्ण है जिनमें विद्यालय, पर्यावरण संवर्द्धन, संग्रहालय, शोध संस्थान, वर्णी आडिटोरियम आदि प्रकल्पों का विशेष उल्लेख है।

विशेष रूप से जैन संस्कृति मूर्ति प्रधान संस्कृति रही है। तीर्थंकरों ने साधना के लिए यहाँ जिन एकांत स्थलों का चयन किया उसके संरक्षण में भी श्री सुरेश जी का योगदान रहा है। मंदिरों के निर्माण में भी उनकी प्रमुख भागीदारी रही है। सभी मंदिरों का प्रशस्तियों सहित विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है।

नैनागिरि एक पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगर है। विश्व प्रसिद्ध भीमबेटका के काल में यहाँ से पांच मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया। इसका प्राचीन नाम रेशंदीगिरि (ऋषीन्द्रगिरि) है, जो लगभग 2,900 वर्ष प्राचीन माना गया है। ईसा की छठी शताब्दि में यह क्षेत्र चेदि महाजन पद के अंतर्गत था। ईसा पूर्व से आठवीं शताब्दी में मौर्य, सातवाहन, शक, नाग, गुप्त , हूण, हर्ष आदि राजघरानों ने यहाँ शासन किया। हर्ष के पश्चात् यह क्षेत्र 200 वर्षों के मध्य प्रतिहार तथा चंदेल राजाओं के अंतर्गत रहा। अभिलेखों के आधार पर इसकी पुष्टि होती है। इस प्रकार संपूर्ण ग्रन्थ में प्रामाणिक सामग्री दी गई है। इस ग्रन्थ की रचना करने में अनेक बन्धुओं ने सहायता की है। इसलिए पृष्ठ संख्या बढती गई और 630 पृष्ठों में सामग्री समेटी गई। विविध आयामों की अमर कहानी सरल तथा प्रभावी शब्दों में प्रस्तुत की गई है, जो स्वागत योग्य है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक एक सार्थक दस्तावेज कहा जा सकता है। श्री सुरेश जैन तथा उनकी धर्मपत्नि न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन के प्रयास और समर्पण भाव से यह महान कार्य संपूर्ण हुआ।

संपादक मनुज जी ने इसे पूर्णदायित्व और निष्ठापूर्ण भाव से बहुपक्षीय परिचय ग्रन्थ बनाकर अपने संपादन की गरिमा को बढाया है। वे धन्यवाद के पात्र है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि यह ग्रन्थ इतिहासकार, पुरातत्वविदों, अभिलेख विशेषज्ञों, कलाप्रेमियों, चित्र विशेषज्ञों, शैलचित्र प्रेमियों, वनस्पति विज्ञान के अध्येताओं, अध्यात्म प्रेमियों, कथा प्रेमियों तथा विशेषकर जैन धर्म के अनुयायियों के लिए बहु उपयोगी है। मैं इस ग्रन्थ के निर्माण में जुटे सभी महानुभावों को पुन: साधुवाद देता हूँ और पाठकों से इसे पढने का अनुरोध करता हूँ। विशेषकर शोधार्थियों के लिए यह एक अच्छा प्रामाणिक दस्तावेज है। आगे भी इस प्रकार के प्रयास होते रहेंगे, ऐसी आशा है। यदि समाज सेवा की चाबी हमारे हाथ में होती है तो धर्म की उपासना का बहुत बडा रहस्य हमें उपलब्ध हो जाता है। इस ग्रन्थ की रचना का यह संदेश भी हमें मिलता है।

यह ग्रन्थ इस बात को भी प्रमाणित करता है कि मनुष्य में शक्ति का अनन्त भण्डार है किन्तु उस शक्ति से उसे परिचित कौन कराए? आवश्यकता इसी प्रकार के प्रयासों की है जो लोगों को उनकी शक्ति से परिचित कराए। इसके लिए लेखन का माध्यम सर्वश्रेष्ठ है। किमधिकम्।

जगतगुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी की विनयांजलि सभा का आयोजन हुआ संपन्न

२७ मार्च २०२३ श्री दिगम्बर जैन सेनगण मंदिर एवं अन्य मंदिर सस्थाएं व अनेक सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से परम पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी की विनयांजलि सभा का कार्यक्रम सन्मति भवन, लाडपुरा इतवारी में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. विद्याधर जोहरापूरकर ने की। विशेष रूप से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, श्री अभय पनवेलकर, श्री प्रकाश बोहरा, महेंद्र सिंघवी, श्री आनंदराव सवाने, श्री आनंद मोदीलाल जैन ने उपस्थित रहे।

प.पू स्वामी जी के सम्पूर्ण जीवनीपर विस्तृत जानकारी देते हुए श्री संतोष जैन पेंढारी ने कहा कि स्वामी जी ने १९ अप्रैल, १९५० में श्रवण बेलगोला के भट्टारक पद पर आरूढ़ होकर अपने कार्य की शुरुवात की और श्रवणबेलगोला क्षेत्र को विश्व के पटल पर लाकर रखा और विकसित किया। यहाँ पर ९०० साल पुरानी ५७ फ़ीट खड्गासन दिगम्बर बाहुबली भगवान की प्रतिमा अखंड पाषाण में है इसकी छाया नहीं गिरती। यह विश्व में एक अनुपम आश्चर्य है। यह दिगम्बरत्व की पहचान है। इस मूर्ति का ही १२ साल में एक बार महा मस्तकाभिषेक होता है जो तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में मनाया जाता है। इसमें देश परदेश के सभी शीर्षस्थ नेतागण जैसे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री तथा देश के जाने माने गणमान्य महानुभाव उपस्थित होते हैं। १९८१ तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने महा-मस्तकाभिषेक के लिए उपस्थित रहकर स्वामी जी के काम करने की शैली से उन्हें कर्मयोगी की उपाधि से सम्मानित किया। इस महा-मस्तकाभिषेक में ४००-५०० जैन, आचार्य उपाध्याय, साधु, आर्यिका, क्षुल्लक, व्रती और लाखों की संख्या में भक्तगण उपस्थित रहते हैं। स्वामी जी जैन धर्म के साथ पूरे समाज के विकास के लिए अनेक कार्य किये। रोजगार आवास के अनेक मूलभूत कार्य किये। इसीलिए तो राष्ट्रीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन सेनगण मंदिर के अध्यक्ष श्री संतोष पेंढारी ने किया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से विनयांजलि श्री उदय गहाणकरी, श्री उदय जोहरापुर, श्री अनिल जोहरापुर, श्री राकेश पाटनी, श्री दिलीप राखे, श्री अभय पनवेलकर, श्री जगदीश गिल्लरकर, श्री राजकुमार खेडकर, श्री नितिन नखाते, श्री पंकज बोहरा, श्री अनिल जैन लक्ष्मीनगर, श्री प्रकाश मारवाडकर, किशोर मेंढे, श्री मनोज बंड, श्री सुनिल पेंढारी, श्री प्रशांत भुसारी, श्री अविनाश शहाकार, श्री प्रशांत मानेकर, श्री दिनेश सावलकर, श्री अनूप खंडारे, श्री दीपक दर्यापूरकर, श्री दीपक पनवेलकर, श्री अजीत ढालावत, श्री शरद मचाले, श्री संजय टक्कामोरे, श्री विजय उदापूरे, श्रीमती प्रीति पेंढारी, श्रीमती शीला उदारपूरकर, श्रीमती समीक्षा जोहरापूरकर, श्रीमती संगीता पेंढारी इनके साथ समाज के सभी संस्था के पदाधिकारी एवं मान्यवर उपस्थित थे।

- हिराचंद मिश्रीकोटकर

आचार्य कुंदकुंदजी की जन्मभूमि कोंनकोंडला में रास्ता बनाने हेतु जमीन अधिकृत की गयी

आचार्य कुंदकुंद जी की जन्मभूमि कोंनकोंडला के विकास के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा योजनायें निर्धारित हैं जिन पर कार्यवाही की जा रही है। निर्धारित योजनाओं में एक जिन मंदिर, यात्रियों के लिए धर्मशाला, कुंदकुंद स्मारक, बाउंड्री वाल बनाए आदि का कार्य होना है तथा पहाड़ तक पहुँचने के लिए सुगम रास्ते के निर्माण हेतु जमीन कीमती की ओर से खरीद कर अधिकृत की गयी है तीर्थक्षेत्र कमेटी के आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल एवं पांडिचेरी अंचल अध्यक्ष श्री दिनेश सेठी की उपस्थिति में जमीन का अधिकृत सम्बन्धी कार्य किया गया।

भगवान महावीर का संदेश सर्वव्यापी

- स्वराज जैन (टाइम्स)

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति के तत्वावधान तथा परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2622वां जन्म कल्याणक महोत्सव विज्ञान भवन, नई दिल्ली में शंखनाद के साथ सोहार्दपूर्ण और उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव को दीपावली 2023 से दीपावली 2024 तक वर्ष पर्यन्त "अहिंसा पर्व" के रूप में मनाने उदघोषणा की गई। शंखनाद के साथ ही 2550वें निर्वाण महोत्सव का लोगो (स्वहव) धर्मचक्र तथा श्री महावीराष्टक दीपार्चनम् पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज ने कहा कि भगवान महावीर मे सत्य और अहिंसा का जो संदेश दिया, गागर में सागर है। महावीर का धर्म मजबूरी नहीं, बल्कि मजबूती है। देश की आजादी में जैन समाज का उत्कृष्ट योगदान रहा है 2550वां निर्वाण महोत्सव समारोह हम सब जैन समाज के अनुयायी अदभुत और अद्वितीय रूप से मनायेंगे। ऐसी उन्होंने कामना की।

आर्ट आफ लीविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकर ने अपने आशीर्वचन में कहा कि महावीर ने लोगों को जीना सिखाया है। जैन धर्म ने दुनिया को स्यादवाद, अहिंसा, शाकाहार का सिद्धान्त दिया है। ज्ञान और ध्यान हमारा मूल है सिद्धशिला में महावीर का वास हमेशा रहता है। महावीर संदेश विश्व संस्कृति को अमूल्य देन है। समयसार ग्रंथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। 2550वें निर्वाणमहोत्सव पर इस दीपावली पर 2550 वाद्ययन्त्रो से जयघोष करेगें।

श्री चिदानंद सरस्वती, हरिद्वार ने अपने उदबोधन में कहा कि महावीर सबके लिए हैं, सबके हैं और सदा के लिये है। आज का शंखनाद है कि महावीर की वाणी मानवता की वाणी है। हमें महावीर मनाना नहीं बल्कि जीना है। 2550वें निर्वाण महोत्सव है पर आगामी दीपावली के में गंगा घाट पर 25,550 दीये जलाना है।

केन्द्रीय नागरिक विमानन एवं सड़क यातायात राज्य मंत्री श्री वी.के. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समस्याग्रस्त विश्व को भगवान महावीर के उपदेशों विशेषकर राज्य, अहिंसा और अपरिग्रह को अत्यधिक आवश्यकता है। उनके शिक्षाओं से ही विश्व का कल्याण संभव है। जैन समाज उनके आदेशों फो का देश-विदेश में प्रचार-प्रसार कर रहा है, जो अधिक सराहनीय है

केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री कपिल मोरेश्वर पाटिल ने कहा कि भगवान

महावीर का संदेश सम्पूर्ण विश्व में पहुंचे ऐसी मेरी कामना है।

अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष श्री विजय सांपला ने कहा कि महावीर वाणी के अहिंसा परमो धर्मः तथा जीयो जीने दो का संदेश घर-घर तक पहुंचाने का काम जैन समाज को करना चाहिए। महावीर के उपदेशों के पालन से देश आतंकवाद का खात्मा होगा। अहिंसा से ही विश्व शांति होगी।

श्री डी.सी. जैन ने जीवन रक्षा कैसे करें, तथा शाकाहार पर प्रकाश डाला। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने कहा कि 2550वां निर्वाण महोत्सव के अवसर पर प्रस्तावित रथयात्रा देश के प्रत्येक गांव से होकर भ्रमण करेगी और भगवान महावीर के संदेश को गाँव गाँव तक पहुँचायेगी।

एन.डी.एम.सी. के उपाध्यक्ष श्री सतीश ने कहा की फोन जैन धर्म के 24वें तीर्थकर भगवान महावीर ने विश्व को अहिंसा का संदेश दिया जो आज अत्यधिक प्रासंगिक है। देश की आजादी के अमृत महोत्सव के साथ जैन समाज शंखनाद समारोह से वर्ष पर्यन्त "अहिंसा पर्व" मना रहा है, "इसके लिये हमारी हार्दिक शुभकामना। "अहिंसा पर्व" विश्व के लिये कल्याणकारी होगा।

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री प्रमोद जैन एवं स्वागताध्यक्षा श्री विशाल जैन(मेरठ)ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

सांसद श्री मनोज तिवारी ने भगवान महावीर के उपदेश विशेषकर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह के महत्व पर प्रकाश डाला तथा अपने मधुरमय संगीत से समारोह को मंत्रमुग्ध किया।

जन्म कल्याणक महोत्सव में गरिमामय उपस्थिति श्री श्री रविशंकर जी महाराज, श्री चिदानंद सरस्वती, केन्द्रीय मंत्री श्री वी. के. सिंह, श्री कपिल मोरेश्वर पाटिल, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सत्यनारायण जटिया, श्री विजय सांपला, श्री श्याम जाजू, श्री वीरेन्द्र सचदेवा, सांसद मनोज तिवारी, श्री दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, श्री पवन जैन गोधा, डा. श्रेयांस जैन, श्री पुनीत जैन, नवभारत टाइम्स, श्री स्वराज जैन, श्री सुभाष ओसवाल, श्री डी.सी. जैन, श्री दीपक जैन सहित अनेकानेक विशिष्ट जनों की थी। समारोह के संयोजक श्री सत्यभूषण जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

क्षुल्लक आगम कीर्ति जी श्रवणबेलगोला के भट्टारक पद पर विराजमान हुए

कर्नाटक प्रांत के हासन जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ गोमटेश

बाहुबली श्रवणबेलगोला के भट्टारक स्वामी चारूकीर्ति जी के महाप्रयाण से रिक्त हुए भट्टारक पद पर उनके ही सुयोग्य शिष्य विचारपट्ट क्षुल्लक आगम कीर्ति जी को देश की 14 पीठों के भट्टारक स्वामी जी के सानिध्य एवं देश के विभिन्न शहरों से पहुंचे समाज श्रेष्ठियों की उपस्थिति में श्रवणबेलगोला मठ में आयोजित पट्टाभिषेक समारोह में विधि विधान के साथ भट्टारक पीठ पर विराजमान किया गया एवं सर्वसम्मति से उनका नाम परमपूज्य जगतगुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी घोषित किया गया।

पट्टाभिषेक समारोह के बाद स्वामी जी को पालकी में विराजमान कर पालकी यात्रा निकाली गई एवं गौरव अभिनंदन सभा आयोजित की गई जिसमें दिवंगत भट्टारक स्वामी जी का पुण्य स्मरण करते हुए वक्ताओं ने उनके द्वारा श्रवणबेलगोला मठ के विकास में दिए गए योगदान की चर्चा करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की और नए भट्टारक स्वामी जी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जैन गौरव श्री सुरेंद्र हेगड़े कर्नाटक, श्री सुधीर सिंघई कटनी, श्री हंसमुख गांधी इंदौर, श्री राजेंद्र जैन महावीर सनावद, श्री अशोक सेठी बेंगलोर, श्री सुरेश पाटिल सांगली सहित समाज के भारी संख्या में गणमान्य उपस्थित रहे।

सागर मध्यप्रदेश में भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के दिन "वर्णी चिकित्सा निलय" का हुआ प्रारम्भ

महावीर जन्मकल्याणक के दिन सागर के विमानोत्सव का समारोह शहर के विभिन्न मंदिरों के "महिला मण्डलों" ने अनोखा बना दिया। चल समारोह में सागर को भगवान महावीर के सिद्धांतों के जयघोष के साथ गरिमामय सौजन्य वातावरण बना दिया। जैन संस्कृति के विभिन्न आयाम, धर्मचक्र, अष्ट प्रतिहार्य, मेरु, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ संलेखना, अनेक तीर्थों के आकर्षक चित्रों के प्रदर्शन ने आकर्षण का केंद्र बना दिया।समारोह में सम्मिलित "साधिका आश्रम की झांकी" ने सबका मन मोह लिया। कुंडलपुर महोत्सव २०२२ में आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रवचन के भाव से निकली यह दिशा सागर में प्रारम्भ हुई। श्री दिगम्बर जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम सागर के अंतर्गत संचालित "वर्णी बाग" में साधिका आश्रम में २०२२ में ही २० से अधिक सल्लेखनाएं आर्यिका दृढमति माताजी के सानिध्य में हो चुकी है। भवन का कार्य प्रगति पर है यह भवन शीघ्र ही पूर्ण होगा।

वीर प्रभु के जन्मकल्याणक के दिन सागर के हृदय स्थल कटरा में जन –कल्याणार्थ "वर्णी चिकित्सा निलय" प्रारम्भ किया गया। यहाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा जन सामान्य को रोग के कष्ट से निवारण दिलाने में मील का पत्थर साबित होगी। उक्त जानकारी श्री दिगम्बर जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम ट्रस्ट के मंत्री डॉ.पी.सी.जैन सागर ने दी।

जीवन परिचय -

नवनियुक्त भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी स्वामी श्रवणबेलगोला

कर्नाटक राज्य के शिमोगा जिला की सागर तहसील में श्रावक श्रेष्ठी श्री अशोक इन्द्र व श्रीमती अनिता अशोक इन्द्र के घर आंगन में 26 फरवरी 2001 को एक प्रतिभा संपन्न बालक का जन्म हुआ जिसका नाम 'आगम इन्द्र' रखा गया । आपके दादाजी श्रावक श्रेष्ठी श्री आदप्प इन्द्र तथा दादी श्राविका श्रेष्ठ श्रीमती नागम्मा है जो सागर तहसील के करुरु ग्राम के निवासी रहे है।

शरीर व मानसिक बल से परिपूर्ण इस प्रतिभाशाली पुत्र को गर्भ से ही धार्मिक संस्कार व देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति का भाव आरोहित किया गया। सागर में हाईस्कूल तक फिर उजिरे से हायर सेकेण्डरी के बाद आपने कम्प्युटर शिक्षा के साथ महाविद्यालय से बेसिक ऑफिस एडमिनिस्ट्रेशन कोर्स सहित कई भाषाओं को सीखा, कन्नड़ के साथ हिन्दी, अंग्रेजी में परिपूर्ण आपने राष्ट्रीय केडेट कोर में बी सर्टिफिकेट प्राप्त किया जो आपकी शारीरिक व मानसिक प्रतिभा का परिचायक है । आप भारतीय सेना में सम्मिलित होकर राष्ट्र भक्ति में अपना जीवन देना चाहते थे साथ ही बचपन में एक कुशल उद्यमी बनकर अनेकों लोगों को रोजगार देना चाहते थे । आपके बड़े भाई का नाम श्री अक्षर इन्द्र है।

आपका सरल-सहज-मधुर व्यवहार व धार्मिक संस्कारों के साथ राष्ट्र की सेवा करने की भावना व आपकी कुण्डली में दिख रहे उत्कृष्ट भविष्य को देखकर परम् पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामी ने 2 दिसम्बर 2022 को उन्हें भट्टारक दीक्षा प्रदान कर विचार पट्ट क्षुल्लक आगमकीर्ति नाम दिया । विगत चार माह से स्वामीजी ने उन्हें क्षेत्र की परम्पराओं से परिचित कराकर परिपूर्ण किया । परिवार में द्वितीय पुत्र आगम इन्द्र अद्वितीय प्रतिभा के साथ कुशल वक्ता व समर्थ व्यक्तित्व के धनी है । मात्र 22 वर्ष की आयु में विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला की बागडोर अपने हाथ में लेने वाले आप अब अपने गुरु की गरिमा को बनाये रखकर उनके शेष रहे कार्यों को पूर्ण करने की इच्छा के साथ उत्कृष्ट भाव रखते है।

उल्लेखनीय है कि जब परम् पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामी ने 12 दिसम्बर 1969 को दीक्षा ली थी तब उनकी आयु भी मात्र 20 वर्ष थी । संपूर्ण देश के प्रमुख गणमान्य जन व त्यागी आचार्यों का आशीर्वाद उन्हें ऊंचाईयां प्रदान करेगा । विचार पट्ट क्षुल्लक श्री आगमकीर्तिजी को परम् पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक महास्वामी के महाप्रयाण दिनांक 23 मार्च 2023 को हो जाने से उन्हें 27 मार्च 2023 को पट्टाभिषेक कर संपूर्ण विधि विधान के साथ श्रवणबेलगोला के भट्टारक पीठ पर विराजमान किया गया । जिसमें बारह पीठों के भट्टारक महास्वामी सहित संपूर्ण देशभर के हजारों श्रावक श्राविकाएं सम्मिलित हुए । 27 मार्च 2023 से उनका नाम पूज्य जगदगुरु स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामी हो गया है।

तीन बार गोम्मटेश भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक में प्रमुख सान्निध्य प्रदाता प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागरजी महाराज की पट्ट परम्परा के पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सहित अनेक आचार्यों, मुनिराजों, त्यागीवृन्दों ने भी उन्हें अपना आशीर्वाद भेजकर क्षेत्र की परम्पराओं के निर्वहन हेतु शुभ भावना व्यक्त की है।

राजेन्द्र जैन 'महावीर

❊ मंगल आशीर्वाद ❊
❊ मंगल सान्निध्य ❊
परम पूज्य मुनिश्री अमोघकीर्ति जी महाराज
परम पूज्य मुनिश्री अमरकीर्ति जी महाराज
❊ मंगल सान्निध्य ❊
परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, चतुर्थ-पट्टाधीश, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज
॥ श्रुतार्चना महोत्सव ॥
150 ग्रंथो का विमोचन समारोह
रविवार दि. 30 अप्रेल 2023
श्री सर्वार्थसिद्धी जिनालय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मे श्रीक्षेत्र अरिहंतगिरी तामिलनाडू की अति प्राचीन पावन भूमी मे परम पूज्य तपस्वीसम्राट आचार्य श्री सन्मतीसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य चतुर्थ पट्टाधिश परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागरजी महाराज के द्वारा रचित एवं अनुवादित 150 ग्रंथो का विमोचन समारोह दिनांक 30-4-2023 को दोपहर दो बजे से आयोजित किया गया है। यह समारोह देश के विविध संस्थाओं के रेकॉर्ड में दर्ज किये जायेंगे । उपस्थित रहकर धर्मलाभ लेवे।
❊ मंगल नेतृत्व ❊
भट्टारक चिंतामणी, डॉ. स्वस्ति श्री
पट्टाचार्य धवलकीर्त्ति जी भट्टारक स्वामीजी
क्षेत्र पर पधारने के लिये
पोलूर और अरणी से बसव्यवस्था उपलब्ध है।
यह क्षेत्र आरणी से 20 किलोमीटर
पोलूर से 12 कि.मी. है।
- आयोजक एवं कार्यक्रम स्थान -
अरिहन्तगिरि जैन मठ, तिरुमलै, (तामिलनाडु)
Shree Kshetra Arihanthagiri Digambar Jain Mutt,
Arihanthagiri, Post. Thirumalai, Tq. Polur, Dist. Thiruvannamalai(Tamilnadu) 606 907

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi April 2023
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRABAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY